आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2020-2022

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जनसंवाद का पाक्षिक

वर्ष 6 | अंक 01 | उदयपुर शुक्रवार 15 जनवरी 2021 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

कौन हैं हिममानव और कहां हैं.....

-दिनेश रावत-

मध्य हिमालयी क्षेत्र पाण्डवों की क्रीड़ा स्थली रही है। इस हिमालय क्षेत्र से पाण्डवों का विशेष नाता रहा है। पुत्र प्राप्ति कामना हेतु सपत्नीक पाण्डु की तपस्या, पाण्डवों का जन्म, बाल्यकाल के अतिरिक्त वनवास के दुर्दिन और अज्ञातवास के अकल्पनीय पल हिमालय की इन्हीं कन्दराओं में व्यतीत होते हैं।

मोक्ष प्राप्ति कामना के साथ भी पाण्डव इसी क्षेत्र का रूख कर यहीं से स्वर्ग गमन करते हैं। इन सबके इतर दुर्योधन द्वारा पाण्डवों को जिन्दा जलाने की योजना के तहत लाक्षागृह निर्माण के लिए जिस स्थान का चयन किया जाता है, वह भी इसी हिमालय क्षेत्र में अवस्थित है जिसे 'यामुनपर्वत' यानी यामुनदेश के रूप में वर्णित किया गया है।

यमुनापर्वत के रूप में वर्णित यमुना तट पर देहरादून-उत्तरकाशी की सीमा पर अवस्थित यह स्थाल 'लाखामण्डल' नाम से जाना जाता है। प्रचलित किवदंतिनुसार लाखामण्डल में लाख निर्मित आलिशान महल का निर्माण करवाये जाने पर ही इस स्थान का नाम 'लाखामण्डल' पड़ा जो वर्तमान में भी प्रचलन में है।

यद्यपि पाण्डव यहां से सकुशल बच निकलने में सफल होते हैं किन्तु दुर्योधन की दुष्टता से भयभीत होकर वे इसी क्षेत्र में निर्जन वनों में भटकते हुए, कंदमूल, कफल खाकर निर्वासित जीवन व्यतीत करते रहते हैं। इस दौरान लोकवासियों के साथ पाण्डवों का सतसंग व सत्सर्ग होता है। खुद की पहचान छुपाएं पाण्डव लोकवासियों के सुख-दु:ख से परिचित होते हैं। अपनी धर्म प्रियता व दयालु प्रवृत्ति के चलते लोकवासियों के सहायतार्थ समूचे क्षेत्र को आतंकित करने वाले राक्षसों का वध करते हुए, लोकवासियों को राक्षसों के आतंक से मुक्ति दिलाते हैं।

अपनी सहिष्णुता, धर्मपारायणता तथा दयाभाव के चलते वे लोकवासियों को ह्रदयस्थली में अपना स्थान सुनिश्चित कर लेते हैं। पाण्डवों की शक्ति का लोहा मानते हुए लोकवासियों के मन में पाण्डवों के प्रति आस्था, अनुराग व श्रद्धा के भाव प्रस्फुटित होते हैं, जो वक्त के तदनन्तर विशालकाय वृक्ष में तब्दील होकर लोक को आप्लावित करते रहते हैं।

लोकवासियों की इसी श्रद्धा भक्ति, आस्था व अनुराग से अभिभूत होकर पाण्डव देवात्माएं लोकवासियों के आह्वान, स्तुति व स्मरण पर किसी व्यक्ति विशेष के शरीर में प्रविष्ट कर अपनी उपस्थिति, शक्ति व सार्मथ्य का एहसास करवाते हुए लोगों के दु:ख-दोषां का निवारण, सफल व सुखद भविष्य हेतु शुभाशीष प्रदान करते हैं। लोक आयोजनों में पाण्डवों से सम्बन्धित आयोजन तथा

देवताओं में पाण्डव आराध्य देवों के रूप में पूजित हैं तो महाभारतकालीन लोककथाएं एवं लोकगाथाएं लोकवासियों की कण्ठाहार बन पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित होते हुए लोक की अक्षुण्ण उम्पदा बनी हुई हैं।

उल्लेखनीय है कि क्षेत्र के पाण्डव पूजित ग्रामों में एक स्थान विशेष पाण्डव सम्बन्धी आयोजनों या यूं कहें पाण्डवों के नाम से 'पण्डौं की थात' के रूप में सुसज्जित एवं सुरक्षित है। थाती पर पत्थरों से बना एक चबूतरा शोभायमान है। इस चबूतरे को 'चौंरी' कहा जाता है।

पाण्डवों से सम्बद्ध होने के कारण ये 'पंडौं की चौंरी' के रूप में लोक प्रतिष्ठित व प्रसिद्ध है। चौंरी के ऊपर व अन्दर माभारतकालीन अस्त्र-शस्त्र यथा- धनुष, बाण, गदा, छूरा, बुग्गा, फरसा, धूपदान आदि पाण्डवों के पराक्रम को बराबर प्रतिबिम्बित करते रहते हैं। ये उन्हीं दिव्यास्त्रों के प्रतीक हैं जिनके बूते पाण्डव माभारत विजीत करते हैं। पाण्डव सम्बन्धी आयोजनों के दौरान पाण्डव आज भी इनका प्रयोग करते हुए लोगों को अपनी दिव्य शक्ति का अहसास करवाते हैं।

देवयोग ही कहा जा सकता है कि ग्राम्यजनों द्वारा जब भी पाण्डवों से सम्बन्धित आयोजन होता है, पाण्डवरूपी देवात्माएं कुछ विशिष्ट व्यक्तियों जिन्हें 'पण्डौं पश्वा' कहते हैं, के शरीर में प्रविष्टकर-अवतरित होती हैं या औतरती हैं। इस दौरान लोगों से सम्वाद करती हैं। उनके दु:ख-कष्टों का निवारण-उपाय सुझाती हैं। सुखद भविष्य हेतु आशीष देती हैं और लोकवाद्यों के तालों पर उन्मुक्त होकर नृत्य करती हैं जिससे एक ओर आस्था व विश्वास की जड़ें मजबूत होती हैं तो दूसरी ओर नृत्यशैली सम्बन्धी पाण्डव पात्रों का परिचय व महाभारतकालीन घटना की याद दिलाती हैं। एक-एक कर अवतरित हुए पाण्डव पश्वा अंतत: सभी पश्वाओं के औतरने पर लोकवाद्यों के तालों पर एक साथ मिलकर सामूहिक रूप से नृत्य करना ही 'पाण्डव नृत्य' कहलाता है। पाण्डव अवतरण की यह भी विशिष्टता है कि महिला पात्र महिलाओं तथा पुरुष पात्र पुरुषों पर औतरते हैं।

पाण्डव नृत्य के दौरान जिस व्यक्ति के शरीर में पाण्डवरूपी देवात्मा प्रकट होती है, उसे 'पश्वा' कहा जाता है। पात्र-पुष्टि हेतु प्रत्येक अवतरित पश्वा को लोक प्रचलित कुछ विशिष्ट कसौटियों पर खरा उतरना होता है, जैसे- लोकवाद्यों के तालों को पकड़ना, नृत्य के दौरान अंग व पद संचालन शैली, शारीरिक भाव-भंगिमाएं, अग्नि परीक्षा, सबल साधना, गर्म कोयले चबाना और प्रचलित गेय शैली में अपनी वंशावली का बखान करते हुए अपने वंश का परिचय देना। इन सब चरणों में सफलता अर्जित करने के पश्चात ही किसी व्यक्ति के शरीर में अवतरित देवात्मा की पुष्टि होती है कि वह पाण्डव है अथवा नहीं? और हैं तो पाण्डव परिवार का कौनसा सदस्य?

उल्लेखनीय है कि पाण्डव परिवार के प्रत्येक सदस्य या पात्र के लिए लोकवाद्यों पर पृथकपृथक ताल बजाये जाते हैं। सम्बन्धित पाण्डव पात्र तभी अवतरित होता है, यदि उससे सम्बन्धित ताल बजाया जा रहा हो और उसी ताल को पकड़ नृत्याभिनय करता है।

कई बार औतरित पश्वा के लिए सही ताल न बजने पर सम्बन्धित पश्वा लोकवाद्य या वादक को पकड़ लेता है, जिससे वह सही ताल बजाने लग जाता है। पाण्डव पश्वा द्वारा लोक प्रचलित शैली में अपनी वंशावली के बखान की विधि को 'छाड्या लगाना' कहते हैं। छाड्या पात्र-पुष्टि की महत्वपूर्ण कसौटी है।

लोक संस्कृति के ख्यात विद्वान डॉ. महेन्द्र भानावत ने अपनी 'पाण्डवों की भारतगाथा' पुस्तक की 50 पृष्ठीय वृहद् भूमिका में देश के विभिन्न अंचलों में प्रचलित पाण्डवों से सम्बन्धित स्थलों, स्मृतिचिन्हों, गाथाओं तथा पड़ावों पर बहुत ही रोचक जानकारी दी है। वे लिखते हैं-

''मेरी दृष्टि में यह हिममानव एक अकेला नहीं होकर पांच हैं और ये पांचों पाण्डव हैं। इनके साथ कुन्ती और द्रोपदी भी है। ये साधारण मानव नहीं अपितु असाधारण एवं अलौकिक मानव के रूप में साधनारता हैं।

इनका शरीर, हाड़ और रक्त एकमेक हो गया है अत: उसमें हवा भी प्रवेश नहीं कर सकती फलत: इन्हें न कुछ खाने की जरूरत है न कुछ पीने की ही। कुन्ती और द्रोपदी आज तक किसी को नजर नहीं आईं अथवा नग्न रूप होने के कारण ही मनुष्य की निगाह से बची हुई है। नारियां तो वैसे भी लज्जा और शर्मशील होती हैं। मनुष्य पापों का पुतला है और ये पापों से मुक्त हैं इसीलिए मनुष्य के लिए अलौकिक एवं रहस्यमय बने हुए हैं। उन्हें पता है कि वे मानव थे। इन सबकी वासना समाप्त हो गई है।

लोक महाभारत केवल धर्मकथा ही नहीं, कर्तव्य और अधिकारों की, मर्यादा और सत्ता-संघर्ष की, नीति और समय-बोध की, जीवन और अध्यात्म की, आत्मा और अराजकता की कथा भी है। एक जीवनचक्र है यह आख्यान जिसमें समग्र मानवता के जीवन-मरण के शाश्वत मूल्यों की विविधरूपा व्यावहारिक कथा-दर-कथा और युग-युगीन परिवेश दृश्य बन्ध है। राजस्थान का हाड़ौती, वागड़, मारवाड़ी, मेवाती का कोई अंचल ऐसा नहीं जहां महाभारत लोक के वृहदाख्यान की कथावलियां और गाथा-गायकियां नहीं गाई, कही जाती हों। हाड़ौती के अहमना के छोये अभिमन्यु की कथा को गमकते हैं।

पाण्डव कोई साधारण मनुष्य नहीं थे। देवत रूप थे इसलिए उनकी सारी लीलाएं असाधारण ही कही जानी चाहिये। वे हिमालय चले गये पर गले नहीं हैं। उनका हिम मानवी रूप तो आज भी वैसा ही बना हुआ है। उन्होंने अपना पाप धोकर जो पवित्रता धारण की उसी के चलते उन्हें मानव-दृष्टि तक स्वीकार्य नहीं है। मनुष्य की निगाह पड़ते ही वे भागते, अदृश्य हो जाते हैं।''

पोथीखाना

क्यूं उलझे तुम मन ? पर एक टीप

वे लोग अधिक नहीं होते जो अपने सकारात्मक सोच के साथ जीते हैं और कुछ कर गुजरते हैं। श्री महेन्द्र मोदी उन सुधीजनों में हैं जो समझदारी से बड़े बनते हैं। सीढ़ी-दर-सीढ़ी पगल्ये नापते हैं। परत-दर-परत खोलते हैं। वाणी-दर-वाणी यायावरी करते हैं और सबद-दर-सबद अपना खजाना खोलते हुए खुले मन होते हैं।

मोदीजी ने दिन काटने और रात काली करने के लिए नौकरी नहीं की। आकाशवाणी की नौकरी को कभी अवकाश वाणी बनाकर विराम नहीं किया अपितु अविराम बने रहकर जो खट्टे-मीठे अनुभव अर्जित किये उन्हें भी लोमड़ी के अंगूर की तरह केवल खट्टे ही नहीं होने दिये, मीठे भी किये। उनकी मिठास ली तो ऐसी ली कि वह उनकी सेवानिवृत्ति के बाद भी उनके जीवन की मधुरिमा बनी हुई है।

इस दृष्टि से उन्होंने राजस्थान में प्रचलित उस कहावत 'पराया री संगत कीधी, वण नी लीधा तो लक्खण तो लीधा' (अन्यों की संगति की, वर्ण नहीं लिया तो लक्षण तो लिया) को एक नई अर्थवत्ता में परिवर्तित कर न तो किसी वर्ण को ग्रहण किया और न किसी लक्षण को हावी होने दिया बल्कि कचरे से कंचन लेकर रेडियो जुबानी के दो भाग 'स्वप्न चुभे शूल से' और उसके बाद 'क्यूं उलझे तुम मन' हमारे सामने हिन्दी साहित्य को अनमोल विरासत के रूप में भेंट किये।

आकाशवाणी में रहते वे अपनी अच्छाई से अपने ही गलत लोगों के शिकार हो गये। इस फंसावट के रहते उन्हें डायरेक्टर की शरण लेनी पड़ी। इस घटना को उन्होंने इस प्रकार वर्णित किया- 'ये वो आकाशवाणी है जिसे सुनकर लोग घड़ियां मिलाते हैं। जिसके समाचारों पर लोग आंख मूंदकर भरोसा करते हैं।

जहां स्टेज के कार्यक्रमों के लिए लाखों रूपये लेने वाले कलाकार कुछ सौ रूपये लेकर प्रोग्राम करने में फख्र महसूस करते हैं। आखिरकार मेरी अपील पर अफसर ने गौर से देखा तो उसमें किसी साजिश की बू आई और मेरा वो केस पूरे बारह बरस बाद किसी तरह सैटल हुआ।' (क्यूं उलझे तुम मन?, पृष्ठ 285)

माना कि अच्छे लोग कम होते हैं मगर जो होते हैं उन पर फख्र भी कम नहीं होता। उससे जो खुशी मिलती है वह रस

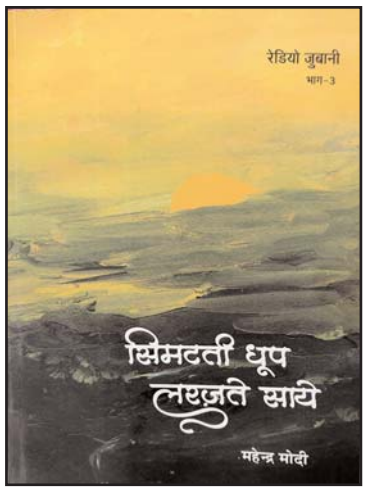

घोलती हुई ताउम्र बनी रहती है। मोदीजी ने इसका खुलासा भी खुलकर किया है- 'ये आकाशवाणी ही थी जिसकी बदौलत मैंने अल्लाहजिलाईबाई से लेकर सोहनीदेवी और मांगीबाई जैसी लोक-संगीत की हस्तियों को रिकार्ड किया। डी. एस. रेड्डी और घनश्याम सुखवाल जैसे कम्पोजर्स के साथ काम करने का मौका मिला। दोनों ही कलाकार मदनमोहन के असिस्टेंट और अरेंजर रहे। उस्ताद बिस्मिल्लाखां, पं. शिवकुमार शर्मा, पं. जसराज, पं. राजन साजन मिश्र से लेकर संजीव अभ्यंकर जैसे शास्त्रीय संगीत के महारथियों को रिकार्ड करने का अवसर मिला। लेकिन सच कहूं तो बहोत अफसोस भी होता है कि मैंने ऐसे लोगों के साथ भी काम किया जो कतई रेडियो के लायक नहीं थे। इस कल्चरल डिपार्टमेंट में इतने अनकल्चर्ड लोग?' (वही, पृष्ठ 286)

अपने घर के पास रहने वाली अमरू जैना और उसके परिवार का वर्णन मोदीजी ने इस कदर बड़ी आत्मीय रोचकता के साथ किया कि उसे पढ़ते एक चित्रपट सा दृश्य हिये की आंख में दृश्यगत होता रहता है। यहां लगता है जैसे उपन्यास का कोई बीज फूट-फैलकर बड़ वृक्ष का रूप ले रहा है।

वर्णन के बाद मोदीजी उसका निकष देकर अपनी उपस्थिति से हमें रू-ब-रू कराने लगते हैं। शराबी का वर्णण करते वे लिखते हैं- 'दारू का नशा कभी इन्सान को इस कदर भावुक बना देता है कि वो बिना बात के आंसू बहाने लगता है और कभी मच्छर जैसे इन्सान को भी इतना बहादुर बना देता है कि वो अच्छे से अच्छे पहलवान से भिड़ पड़ता है।' (पृष्ठ 226)

मोदीजी के लेखन की यह विशेषता है कि उनका लेखन केवल पढ़ने के लिए नहीं होता। उसे सुनकर भी रंग लिया जा सकता है और इससे भी अधिक कोई चाहे तो उसके धारावाहिक एपिसोड बनाकर श्रोताओं के साथ-साथ दर्शकों को भी रसमग्न कर सकता है।

सच तो यह है कि मोदीजी ने आकाशवाणी की केवल नौकरी ही नहीं की। वहां रहकर नाट्य-लेखन भी किया और एक उत्कृष्ट कलाकार के रूप में उन्हें अभिनीत कर प्रसारण भी दिया। यही नहीं, टीवी सीरियल्स में भी उनके अभिनय को दर्शकों ने उतना ही सराहा। ऐसा साहित्य सदैव अपनी चमक बनाये रखता है और उसका लेखक न कभी मरता है, न क्षरित होता है और न कभी भूतपूर्व ही होता है। वह सदैव और सर्वकाल में अभूतपूर्व ही बना रहता है।

-महेन्द्र मोदी लिखित रेडियो जुबानी भाग-3 'सिमटती धूप लरज़ते साये' में प्रकाशित डॉ. महेन्द्र भानावत की सम्मति, पृ. 7-9 से।

गवरी

डॉ. महेन्द्र भानावत लोक के अध्येता के रूप में अपनी विशिष्ट पहचान रखते हैं। उन्होंने बच्चों के लिए दर्जनभर पुस्तकें लिखी हैं। आदिवासी भीलों का अनुष्ठानिक नृत्य 'गवरी' बच्चों के लिए बाल-मनोविज्ञान के अनुरूप रुचिकर है।

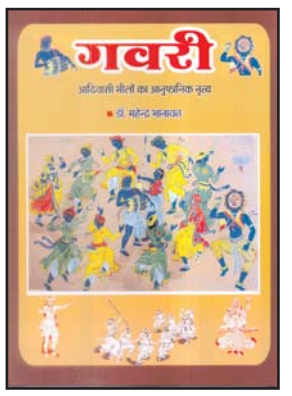

गवरी का आरम्भ भाद्रपद महीने की रक्षाबंधन के ठीक दूसरे दिन से होता है तथा यह सवा महीने तक चलता है। इसका समापन 'घड़ावण' व 'वलावण' के नाम से जाना जाता है। जहां गवरी वाले गांव की बहिन- बेटियां ब्याही होती हैं, वहां इसका आयोजन होता है। प्रत्येक भील परिवार का सदस्य इसमें प्रतिभाग करना अपना धार्मिक कर्तव्य समझता है। गांव का कोई भी चौराहा अथवा खुला आंगन ही गवरी का मंच होता है। इसमें 40-50 से लेकर 90-100 तक लोग प्रतिभाग करते हैं। शिव व भस्मासुर का प्रतीक राई बुड़िया, मोहिनी व पार्वती की प्रतिमूर्ति दो राइंया, कुटकड़िया तथा पाट भोपा ये पांच गवरी के मुख्य पात्र होते हैं जो 'माजी' कहलाते हैं। कुटकुड़िया नृत्य का सूत्रधार होता है। इसके साथ झामट्या 'झामटड़े' सुनाता रहता है। शिव तथा भस्मासुर की कथा गवरी की मूल कथा कही जाती है। लोकजीवन से जुड़ी दो अन्य कथाएं भी गवरी का आधार मानी जाती हैं। गवरी के नामकरण को लेकर आधा दर्जन कारण भी पुस्तक में दर्शाए गए हैं।

गवरी में मुख्यत: छह प्रकार के पात्रों ?का प्रतिभाग होता है- देव पात्र, मानव पात्र, दानव पात्र, पशु पात्र, जलीय पात्र, आकाशीय पात्र। इन्हीं के साथ गवरी सम्पन्न होती है। लगभग 50 के करीब विविध स्वांग-प्रहसनों से युक्त इसका प्रदर्शन दिनभर होता रहता है। ये स्वांग एतिहासिक तथा सांस्कृतिक सामाजिकता के अनेक पौराणिक तथा मध्यकालीन सन्दर्भों के सूत्र लिए हैं।

महाराणा प्रताप के चितौड़गढ़ में कालिका की शरण में जाकर सहायता मांगना और बादशाह अकबर की फौज का किले पर आते ही कालिका देवी का उनसे युद्ध तथा बादशाह का देवी के चरणों में गिर पड़ना व उसकी फौज की पराजय को भी गवरी में दर्शाया जाता है। ऐसे ही भीलू राणा के साथ बादशाह का युद्ध अभिनीत किया जाता है जिसमें भीलू राणा बादशाह को? मार गिराता है और उसकी विजय की खुशी में जय-जय का उद्घोष होता है और सामूहिक गम्मत की जाती है। इसे महाराणा प्रताप व अकबर के हल्दीघाटी के युद्ध के प्रतीक के रूप में किया जाता है।

आखिर में शेर अथवा सिंह जिसे 'नार' कहा जाता है, बने पात्र के नृत्य के साथ ही गवरी का समापन होता है। माता कालिका का वाहन होने के कारण नार को शुभ माना जाता है। महिलाएं अपने बच्चों को उसके समीप ले जाकर उसका स्पर्श कराती हैं। ऐसा माना जाता है कि इससे बच्चे भविष्य में आने वाली आधि-व्याधि से बच जाते हैं तथा वर्तमान बीमारी से भी मुक्त हो जाते हैं।

डॉ. महेन्द्र भानावत की यह पुस्तक बेहद रोचक व जानकारीपरक है। इसे पढ़ते हुए एक कौतुहल सा निरंतर बना रहता है। यह बच्चों में लोक के प्रति गहरी रुचि जगाने में समर्थ है।

चित्रा प्रकाशन आकोला, राजस्थान से प्रकाशित यह पुस्तक 60 रूपये मूल्य की है। गोवर्धन बाबा के रेखाचित्रों ने गवरी को बेहद आकर्षक बनाने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ी है।

-महावीर रवांल्टा

डॉ. तुक्तक कोरोना वारियर के रूप में सम्मानित

उदयपुर (का.सं.)। कोरोना वॉरियर्स को सम्मानित करने के लिए फर्स्ट इंडिया न्यूज़ राजस्थान की ओर से उदयपुर में सेल्यूट फर्स्ट कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर पीटीआई उदयपुर के संवाददाता एवं जार अध्यक्ष डॉ. तुक्तक भानावत को

उदयपुर सांसद अर्जुनलाल मीणा, संभागीय आयुक्त विकास सीताराम भाले, जिला कलेक्टर चेतन देवड़ा, रविंद्रनाथ टैगोर मेडिकल कॉलेज के प्राचार्य डॉ. लाखन पोसवाल, नगर निगम के उपमहापौर पारस सिंघवी और कांग्रेस के वरिष्ठ नेता पंकज शर्मा ने शॉल, उपरना और स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया। वैश्विक महामारी कोविड-19 के दौर में अग्रिम पंक्ति पर खड़े रहकर, इस महामारी को पीछे धकेलने वाले 21 कोरोना वॉरियर्स को सम्मानित करने के लिए आयोजित हुए इस कार्यक्रम में सीनियर एडिटर सैयद उमर, एडिटर अनीता हांडा मौजूद रही। डॉ. रवि शर्मा ने सभी अतिथियों का स्वागत किया।

ग्रामीण बच्चों को स्वेटर, मास्क वितरित

उदयपुर (का.सं.)। ग्रामीण क्षेत्र के बच्चों को हंसा माइनिंग के हिम्मतसिंह चौहान परिवार द्वारा स्वेटर तथा मास्क वितरित किये गए।

यह जानकारी देते साहित्यिक-सांस्कृतिक संस्था सम्प्रति संस्थान के सचिव डॉ. तुक्तक भानावत ने बताया कि शहर से 20 किलोमीटर दूर बसे गोडानकलां तथा छोटा मदार तालाब मगरी में निवास कर रहे 75 जरूरतमन्द बच्चों को

सेवाभावी हिम्मतसिंह चौहान, उनकी पत्नी प्रियंका तथा पुत्र शिवायसिंह द्वारा टोपीदार स्वेटर, मास्क तथा लोलीपोप का वितरण किया गया। सम्प्रति संस्थान के सान्निध्य में आयोजित इस कार्यक्रम में स्थानीय हेमराज, चतरा, मिथुन, कमलेश, शंकरलाल, खेमराज, यशवंत गमेती, निर्भयसिंह राजपूत, मोहन कुमावत तथा भमरी, गंगा, चुन्की आदि उपस्थित थे।

स्मृतियों के शिखर (115) : डॉ. महेन्द्र भानावत

यादों के एल्बम की आईना बनी कानोड़ की शिक्षा संकुली विभूतियां

अपनी जन्मभूमि कानोड़ को मैंने धुर बचपन में 15 वर्ष की उम्र में सन् 1953 में ही छोड़ दिया था पर आज भी उसका मोहपाश मुझे जुदा नहीं कर रहा है। जाता हूं यदाकदा और उन सारे स्थानों, व्यक्तियों, संस्कारों की गंध से सराबौर हो, अपने को चार्ज कर लौट आता हूं। हमारे बड़ेरों ने जन्मभूमि को स्वर्ग से भी महान की उपमा दी है। सच है, उम्र के अन्त तक की यात्रा में वह भूमि जीवन को रस प्लावित कर सदाबहार बनाए रखती है।

वहां के शिक्षा क्षेत्र की बात कहूं तो कानोड़ की शिक्षा नगरी के रूप में दूर-सुदूर तक बड़ी पहचान रही। पं. उदय जैन ने जवाहर विद्यापीठ की स्थापना कर शैक्षणिक दृष्टि से जो उपलब्धिमूलक हलचल दी उसके कारण वे मेवाड़ के मालवी के नाम से जाने गए। उनके बाद नाथूलाल जारोली, फिर सोहनलाल धींग तथा हिम्मतसिंह डूंगरवाल ने संचालक का दायित्व ग्रहण किया। ये पं. जैन साहब के नक्शे कदम पर संस्था-संचालन करते रहे। महत्वपूर्ण प्रसंग यह रहा कि तीनों ही विद्यापीठ के छात्र रहे। वहीं शिक्षा ग्रहण की और फिर संचालक के रूप में उदीयमान बन 'उदयजोत' जलाते रहे। पं. उदय जैन तथा जारोलीजी के चहेते शिष्य का गौरव-श्रेय लेने में मेरा भी योगदान बना

यह सुयोग ही रहा कि 27 सितम्बर 1952 को जन्मे श्री डूंगरवाल ने अपने पिता श्री जैन के दायित्व को पूर्ण निष्ठा, समर्पण, ईमानदारी और योग्यता के साथ निभाया। वे उदय जैन के ही हमशक्ल मंझले पुत्र थे। वे विद्यापीठ में अध्यापन कराते सन् 2000 से लेकर 11 वर्ष तक प्रिंसिपल रहे और फिर संचालक बने।

संचालक पदासीन होने पर सोहनजी उन्हें मिलाने मेरे निवास लाये थे। उनका परिचय कराते सोहनजी ने बड़े उत्साह से कहा था कि ये संचालक सहित पांच पद ग्रहण किए हैं। मैंने उन्हें बड़ी आत्मीयता से गले लगाया। कुशलक्षेम पूछी और अपने स्वभाव के अनुसार मधुरता से कहा, इतने से समय में इतनी योग्यता कैसे आगई और यदि आ गई और यदि आ भी गई तो मेरी दृष्टि से एकदम अपने पर इतना बोझा लेना उचित नहीं है। स्वस्थ चित्त और खुशहाल रहने के लिए टेंशन फ्री होकर लोकतंत्र का सच्चे मन से निर्वाह करना चाहिए।

मुझे अच्छा लगा कि हिम्मतजी ने इसे तनिक भी अन्यथा नहीं लिया और उसके बाद हमारा मिलना-जुलना अच्छे रूप में दृढ़तर बना रहा किन्तु 19 जून 2015 को उनके निधन का समाचार पाकर में सन्न रह गया।

पूछने पर पता चला कि शिक्षा विभाग द्वारा दिये जाने वाले आर्थिक सहयोग के अभाव में अनेक संस्थाओं की स्थिति डांवाडोल होने पर भी हिम्मतजी स्टाफ की सैलेरी चुकाते रहे जिससे विद्यापीठ पर कर्ज का आर्थिक भार बढ़ता गया। ब्याज के रूप में हर माह वे एक बड़ी राशि का समय पर भुगतान कर विद्यापीठ की साख को बचाते रहे। संभवत इसका भी कहीं न कहीं, किसी कोने में उन्हें भारी सदमा रहा।

मुझे याद आया पं. उदय जैन ने भी तीन छात्रों से जब विद्यापीठ प्रारम्भ किया था तो उनके साथ तो और आर्थिक तंगी रही पर सारी मुसीबतें झेलकर ही जो बाजी बनाए रखता है उसी का बोलबाला होता है।

सोहनजी ने बाद में मुझे उल्लासपूर्वक खबर सुनाई थी कि शिक्षा विभाग से रूकी हुई सारी राशि अब प्राप्त हो गई है और संस्था पर आज की तारीख में कोई कर्ज नहीं है। हम प्रसन्न थे मगर कहते रहे, काश! हिम्मतजी आज हमारे बीच होते तो संस्था में उनके स्वप्न के चार चांद खिलते हुए भी हम देख पाते लेकिन होनी को कौन टाल सकता है।

सोहन धींग, डॉ. भानावत, हिम्मत डूंगरवाल तथा शांतिचंद्र बाबेल

हमारा इतिहास भी ऐसे शानदार उदाहरणों से भरा हुआ है। भारतीय मानस की ही यह बलिहारी है कि वह 'यही होना था' कहकर बड़े से बड़े आघात सहकर भी अंततोगत्वा संतोष धारण कर लेता है। हिम्मतजी का एक और उल्लेखनीय पक्ष यह देखा कि सोहनजी के सेवानिवृत्त होने पर भी वे उनके लगातार सहयोगी बन उनके अनुभवों का सम्बल लेते रहे।

इन दोनों के अलावा कानोड़ के तीसरे संचालक शान्तिचन्द्र बाबेल का जिक्र किए बिना खटकने जैसा अधूरापन लगेगा। आचार्य तुलसी ने जब अपने प्रवास में कानोड़ को पगल्या दिया तब उन्होंने वहां शिक्षा-सेवा के एक आदर्श संस्थान के सपने को साकार करने का आह्वान किया। तब सब के बीच एक सुश्रावक शान्तिचन्द्रजी ने खड़े होकर गुरुदेव का यह दायित्व ग्रहण करने का संकल्पित दृढ़ चित्त बनाया और आचार्य तुलसी के 75वें अमृत महोत्सव को स्थायी यादगार बनाने तुलसी अमृत शिक्षा संस्थान प्रारम्भ किया।

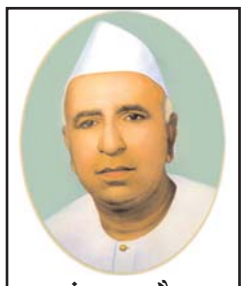

पं. उदय जैन

कानोड़ में तेरापंथ सम्प्रदाय के घर बारह पंथ की तुलना में तब भी बहुत कम थे लेकिन यह बेल चल पड़ी तो ऐसी स्फुटित हुई कि बोर्ड की परीक्षा में प्रतिवर्ष प्रथम 10 की रेंक में 2-4 छात्र यहां से बाजी मारते रहे।

इससे यह शिक्षण संस्थान अव्वल बना। इसके पीछे शान्तिचन्द्रजी का अहर्निश समर्पण सर्वत्र सराहा गया। मैंने तो उन्हें कहा भी था कि उन्होंने पूरे मनोयोग से अपने में उदय जैन को हृदयस्थ कर लिया है। वे भी अन्त तक खद्दर की धोती, जब्बा और टोपी पहने ही अपनी पहचानी पैठ दिये रहे।

वहीं के सवाईलाल पोखरना ऐसे श्रावक होकर निखरे जो चुटकी में वांछित अर्थ सहयोग करने का जैसे जादू लिए थे। शान्तिचन्द्रजी के लिए वे धन एकत्र करने वाले कुबेर ही सिद्ध हुए।

आजादी की लड़ाई में यहां के लोगों का योगदान सर्वाधिक रहा। तेरह तो इस कस्बे में स्वतंत्रता सेनानी की हुए। तब उनके साथ लगभग हर व्यक्ति ने खद्दर और टोपी का पहनावा अपनाया। इससे हम दोनों भाई भी अछूते नहीं रहे पर शान्तिचन्द्रजी ठेठ अन्त तक खद्दर-टोपी में ही उस विरासती इतिहास को अंगरसी बनाये रहे।

कानोड़ में जब-जब भी मैं किसी विशिष्ट समारोह, आयोजन, उत्सव और गमी के अवसर पर गया तो शान्तिचन्द्रजी की उपस्थिति को चलनशाही सिक्के की तरह खनकदार पाता रहा। कानोड़ में उनके द्वारा कई ऐसे कार्य हुए जो उनकी स्मृति को लम्बे समय तक अक्षुण्ण बनाए रखेंगे। उनका स्पर्श जहां भी रहा वह जड़ से चैतन्य बना निखरा।

वह दिन तो मुझे याद नहीं पर वह सीन अवश्य मेरी यादों में एल्बम-आईनात किया आज भी तैर रहा है जब विद्यापीठ के दोनों संगी साथी मुझे समारोह में भाग लेने को नूतने आए थे। मुझे वहां जाकर ज्ञात हुआ कि वह समारोह मेरे ही अभिनन्दन का था। उनकी मेरे प्रति अति आत्मीयता का भावोद्रेकी आयोजन देख मुझे पं. जैन साहब के काल में मनाए जाने वाला वार्षिक अधिवेशन याद आ गया जिसमें मुख्य अतिथि के स्वागत के लिए सारे स्कूली छात्र पलक पांवड़े बिछाये उल्लसित होते। महीने भर पहले से हम सभी छात्र कई रंगतों की तैयारी में जुट जाते थे।

सोहनजी-हिम्मतजी ने मेरा सम्मान भी उसी पारम्परिक रीति से किया। मुझे 'लोककला मनीषी' का अलंकरण दिया तो मैं सकपका ही रह गया। कहा भी कि अपने बचपन के बड़प्पन में शिक्षण की जो सीख यहां मिली वह आज भी स्नेहभीगी किए मेरे लेखन की ऊर्जा बनी हुई है।

अब तो उनमें से कोई नहीं रहा। ऐसे में तब का फोटो ही मेरी यादों के एलबम का आईना बना हुआ है। सच में सोहन-हिम्मत तथा शांतिचंद्र तीनों ही शिक्षा संकुल की विभूति थे।

पं. उदय जैन ने मेवाड़ में शिक्षा की लालटेन लगाकर जो समाजसेवा तथा समाज-सुधार का कार्य किया उससे वे मेवाड़ के मालवीय नाम से सम्बोधित किए गए। सन् 1914 में 17 जुलाई को जन्मे पं. उदय जैन ने छोटीसादड़ी जैन गुरुकुल में शिक्षा-संस्कार ग्रहण कर अपने कानोड़ में 24 अक्टूबर 1940 को मात्र चार छात्रों को लेकर अपने और अपने पिताश्री के संयुक्त नाम से 'प्रतापोदय' स्कूल प्रारम्भ किया।

मानवसेवा के साथ देश के लिए कुछ कर गुजरने की हवा ले जैन साहब ने साल भर बाद ही अपने आदिवासी अंचल को जागरण की हलचल देने का बिगुल बजाते प्रजामण्डल की शाखा प्रारंभ की और 1942 में भारत छोड़ो आन्दोलन की चिंगारी तेज करते अपने साथियों का सुदृढ़ मंच तैयार किया साथ ही खद्दर पहनना शुरू कर उस आन्दोलन की बुलन्दी के अगुआ बन तेरह साथियों के साथ जेल की हवा खाई।

जेल से बाहर निकलने पर भी चुप्पी नहीं साधी। आदिवासी भील-मीणों के जीवनस्तर को ऊंचा उठाने उनके बीच सम्मेलन शुरू करते उन्हें शराब-मांस, चोरी-चकारी जैसी कुटेवों से निजात दिलाई।

जैन साहब के पास हम दोनों भाई भी पढ़े। वहीं से हमें साहित्य क्षेत्र में काम करने का प्रोत्साहन मिला। वार्षिक समारोह में उनके द्वारा लिखित नाटक का गांधीचौकवाला सार्वजनिक प्रदर्शन आज भी मुझे याद है। महाराणा प्रताप नामक उस नाटक में मैं प्रताप का साथी चौथा भील सरदार बना था तब अपनी भुजाओं को उन्नत कर हूंकार भरते मैंने जो दोहा दिया वह आज भी मेरी भुजाओं में खून की गरमास भर देता है। दोहा था-

गोफण की मैं मारकर,
दुश्मन देऊं भगाय।
दो हाथों को देखले,
वैरी यहां आ जाय।।

बाद में जैन साहब ने जब यह नाटक छपवाया तब मुझसे इसका प्राक्कथन भी लिखवाया था। जैन साहब धुन के जबर्दस्त धनी थे। खाली दिमाग लिए वे शयन में क्या स्वप्न मैं भी नहीं रहे। जब भी समय मिलता, वे हमारी कक्षा में पढ़ाने आ जाते। पढ़ाते-पढ़ाते हम छोटे बच्चे उनकी दिमागी उधेड़बुन को भी देखते। लगता जैसे वे कोई यथार्थ बुन रहे हैं। उस बुनाई में मैंने उनकी झपकी भी देखी।

भाई साहब डॉ. नरेन्द्र भानावत ने वहां पांचवीं तथा तथा मैंने आठवीं तक अध्ययन किया। आगे की पढ़ाई के लिए वे कुचेरा, फिर गुरुकुल छोटीसादड़ी चले गए। चौथी कक्षा से मैं भी कविता करना सीख गया। वहीं के पं. शीलव्रत शर्मा हमें प्रत्येक शनिवार को होने वाली साहित्य सभा में बोलने की तैयारी करवाते थे। वे स्वयं भी अच्छे कवि थे जिनसे उदयपुर में अंतिम समय तक मेरा सान्निध्य रहा।

जैन साहब अपने पत्रों में हमें सदैव मेरे प्यारे का सम्बोधन करते और अन्त में उदय जैन के आशिष लिखते। हम दोनों भाइयों से वे निरन्तर सम्पर्क में रह हमारी कुशलक्षेम पूछते रहे। भाई साहब ने उनका अभिनन्दन ग्रन्थ सम्पादित किया तो कानोड़ के कुछ लोगों ने उन्हें यह काम नहीं करने को चिट्ठियां लिखीं। ऐसा अक्सर होता है। अच्छे काम में अड़चन आने का कभी अपशकुन नहीं होता। जो इस क्षेत्र के हैं उनका अनुभव भी यही कहता है।

-शेष पृष्ठ सात पर

शब्द रंजन

उदयपुर, शुक्रवार 15 जनवरी 2021

सम्पादकीय

साहित्य और साहित्यकार

साहित्य और साहित्यकार को किसी दायरे में बांधना अब मुश्किल लग रहा है। वह समय नहीं रहा जब साहित्य को परिभाषित कर उसका सुनिश्चित रेखांकन किया जाता था। पाठ्य-पुस्तकों में जो पढ़ाये जाते वे स्थापित साहित्यकार थे। कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध, समीक्षा साहित्य की प्रमुख विधाएं थीं। खण्डकाव्य, महाकाव्य लिखे जाने का प्रचलन था। फिर तो ये लुप्त ही हो गये। कविता की जगह भी नई कविता, अकविता, अछन्दी कविता आ गई। गीत की जगह नवगीत, अगीत ने ले ली। कथाविधा का तो संक्षिप्तीकरण भी हो गया तब लघु संस्करण छपने लगे।

धीरे-धीरे सनसनीखेजी उपन्यासों की बाढ़ आ गई। कोई एक नाम चल पड़ा तो छद्म नाम से लोग लिखने लग गये। प्रकाशक उसे मोलभाव कर उसका नाम नहीं छापने की शर्त पर अन्य चीजों की तरह साहित्य की खरीददारी करने लगे। इस प्रकार एक नये प्रकार के लिखने वाले भाड़ेती तैयार हो गये। ऐसा गड्डमड्ड सभी विधाओं में हो गया और यह समझा जाने लगा कि कोई भी साहित्य सृजन कर सकता है।

हिन्दी पढ़ाने वाले तो सभी साहित्यकारों की श्रेणी में ही आ गये। समीक्षा का स्वरूप भी बदल गया। किसी कृति की प्रशंसात्मक राय व्यक्त करने तक सीमित हो गया। लोकसाहित्य को तो घाघरी-चूंदड़ का साहित्य ही कहा जाने लगा।

अब तो ऐसे साहित्यिक आयोजन करने, साहित्यिक संस्था चलाने तथा साहित्यिक पत्र-पत्रिका का सम्पादन करने वाला भी साहित्यकार की श्रेणी में आ गया है। ऐसे छोटे-मोटे पुरस्कार देने वाले भी कई हैं जो शॉल, श्रीफल, दुपट्टा देकर साहित्यजनों का स्वागत-सम्मान कर स्वयं भी सम्मानित होते देखे जा रहे हैं।

कहने का तात्पर्य यही है कि समाज में मानवीय मूल्यों का जो क्षरण देखने को मिल रहा है वह साहित्य में भी दिखाई दे रहा है तो अचरज कैसा?

धर्म का सही बोध

-आचार्य तुलसी-

शरीर से दुर्बल रोगी को वैद्य ने दिन में कई बार दूध पीने का परामर्श दिया। रोगी ने दूध मंगवाया। दूध मुंह में लिया और थक दिया। दिन में पांच-सात बार उसने ऐसा ही किया।

इस प्रकार कई दिन बीत गए। रोगी का शरीर पुष्ट नहीं हुआ। वह फिर वैद्य के पास गया। वैद्य ने पूछा-'तुमने दूध पीया या नहीं?' रोगी का सकारात्मक उत्तर पाकर वैद्य संदिग्ध हो गया। उसने स्थिति की पूरी जानकारी पाकर कहा-'दूध गले के नीचे उतरा ही नहीं, फिर शरीर पुष्ट कैसे होगा?'

दूध की बात धर्म के सन्दर्भ में पूरी तरह से घटित होती है। जो धर्म केवल सुनने और पढ़ने तक ही सीमित है, उसका जीवन पर प्रभाव कैसे होगा? जब तक धर्म समस्या के समाधान में सक्रिय नहीं होता है, वह लोकग्राही भी नहीं बन सकता। आज के इस वैज्ञानिक युग में केवल देखने और सुनने से किसी तत्व के प्रति आकर्षण नहीं हो सकता।

आकर्षण उसी तत्व के प्रति होता है जो प्रयोग की कसौटी पर खरा उतरता है। इस युग में यदि धर्म प्रायोगिक नहीं बनेगा, तो वह औरों का तो क्या हित करेगा, स्वयं के अस्तित्व को बनाए रखने में सक्षम नहीं हो सकेगा।

आज हमारे देश के सामने जो सस्याएं हैं उनके मूल की खोज की जाए तो लगता है कि जीवन के प्रति सही दृष्टिकोण का अभाव, आत्म-नियंत्रण की अक्षमता, स्वच्छन्द मनोवृत्ति, असंयम और बढ़ती हुई आकांक्षाएं ऐसे कारण हैं, जो देश को समस्याओं की धधकती आग में झोंक रहे हैं। इन सबमें परिवर्तन की कोई सम्भावना है तो प्रायोगिक धर्म के द्वारा ही है।

प्रायोगिक धर्म सबसे पहले व्यक्ति के दृष्टिकोण को सही बनाता है। दृष्टि सही होने के बाद आदमी का जीने का लक्ष्य बदल जाता है। सही लक्ष्य से प्रतिबद्ध लोकचेतना उन सब विकृतियों का दृढ़ता से मुकाबला कर सकती है जिनके कारण राष्ट्र के सामने समस्याएं खड़ी होती हैं। प्रायोगिक धर्म के जरिये वैयक्तिक और सामूहिक सभी प्रकार की समस्याओं को छुट्टी दी जा सकती है, बशर्ते कि धर्म का सही मूल्यांकन हो, सही प्रशिक्षण हो और सही प्रयोग हो।

ग्रामीण बच्चों को बेट, गेंदें, टॉफियां वितरित

उदयपुर (का. सं.)। साहित्यिक-सांस्कृतिक संस्था सम्प्रति संस्थान की ओर से ग्रामीण बच्चों को क्रिकेट बेट, गेंदें तथा टॉफियां वितरित की गईं। संस्थान महासचिव डॉ. तुक्तक भानावत ने बताया कि उदयपुर से 21 किलोमीटर दूर गोडान कलां ग्राम में बड़गांव पंचायत समिति उपप्रधान प्रतापसिंह राठौड़, पूर्व पार्षद दुर्गेश शर्मा के मुख्य आतिथ्य में गेंदें उछालकर करीब चार दर्जन बच्चों को गेंदें वितरित की गई।

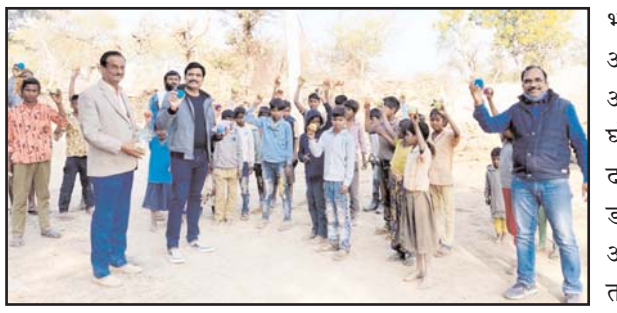

प्रतापसिंह ने कहा कि हम परम्परा से चले आ रहे रीतिरिवाजों को धीरे-धीरे भूलते जा रहे हैं। ऐसे में अभिभावकों को चाहिये कि वे अपने बच्चों को गेंददड़ी, पड़ादड़ी, घोड़ी चढ़ना उतरना जैसे दड़ी-दड़ा खेलों से भी परिचित करायें। डॉ. भानावत ने बताया कि जब आसपास के बालक इकट्ठे हों तब उन्हें पतंग बनाने, उड़ाने तथा कलात्मक दड़ी-दड़े बनाने का प्रशिक्षण दिया जा सकता है।

पाठकों के पत्र में

शब्द रंजन द्वारा साहित्य रंजन की खुराक

कोरोना के इस काल में तो कई तरह की अप्रत्याशित मुसीबतें खड़ी हो गई हैं। वैसे भी अब हमारा दौर तो कल्पनातीत ही हो गया है। आज जब मैं उस समय को याद करता हूं तो अच्छाइयों तथा उपलब्धियों का पूरा का पूरा पहाड़ खड़ा हुआ दृष्टिगत होता है। अब वह सौहार्द, संवाद, मैत्री, भाईचारा तथा आपसी मेलमिलाप सहयोग कहीं नहीं दिखाई देता।

सन् 1954 से 58 तक का महेन्द्रजी और नरेन्द्रजी दोनों भाइयों का बीकानेर का साथ आंखों के सामने तैरता ताजगी देता है। वहां के शंभूदयालजी सक्सेना ने बालसाहित्य पर बहुत लिखा पर उनका ठीक से मूल्यांकन ही नहीं हुआ।

यादवेन्द्रचन्द्र शर्मा, हरीश भादाणी उभरते रचनाकार थे। अक्षयचन्द्रजी शर्मा, चन्द्रदानजी चारण भारतीय विद्या मन्दिर से 'वैचारिकी' और सार्दुल राजस्थानी रिसर्च इंस्टीट्यूट से अगरचन्दजी नाहटा 'राजस्थान भारती' का प्रकाशन करते थे।

बाद में उदयपुर में देवीलालजी सामर के साथ महेन्द्रजी ने लोककला के क्षेत्र में धूम मचा रखी थी। यहां से मासिक 'रंगायन' तथा साहित्य संस्थान से 'शोधपत्रिका', पिलानी से कन्हैयालालजी सहल 'मरुभारती', जयपुर से रावतजी सारस्वत 'मरुवाणी', जोधपुर से नारायणसिंह भाटी 'परम्परा', रामप्रसाद दाधीच 'लोकसाहित्य', बोरूंदा से कोमल कोठारी, विजयदान देथा 'लोकसंस्कृति', बिसाऊ से मनोहर शर्मा 'वरदा' तथा चुरू से गोविन्द अग्रवाल 'लोकश्री' जैसी पत्रिकाओं का प्रकाशन कर जो काम कर रहे थे वह अद्भुत था। अब तो वैसे व्यक्ति और संस्थाएं भी लुप्त गुप्त ही हो गईं।

इनके अलावा सीतारामजी लालस का राजस्थानी सबद कोस, मोतीलालजी मेनारिया का राजस्थानी साहित्य का इतिहास, सौभाग्यसिंह शेखावत का प्राचीन राजस्थानी साहित्य को लेकर जो सृजन हो रहा था उसकी हवा देश के अन्य प्रान्तों तक पहुंची और जगह-जगह अनेक व्यक्ति और संस्थाएं अस्तित्व में आईं।

आज के युवा को तो अपने कामों से ही फुर्सत नहीं है। शिक्षा भी रटन से लेकर श्रवन पठन होती हुई अब मोबाईल, कम्प्यूटर, वाट्सअप जैसे कई उपकरणों में आ गई जिनसे मैं परिचित तक नहीं हूं।

ऐसे में महेन्द्र भाई और उनके आत्मज तुक्तक शब्द रंजन के माध्यम से साहित्य रंजन की अच्छी खुराक दिये रहते हैं जिससे सार्थक समय व्यतीत हो रहा है।

-दीनदयाल ओझा, जैसलमेर

कहावतों के कहकहे (16)

(143) हाथी रौ झूल गधा माथै
(144) दीवा नीचे अंधारो
(145) ऊतर्‌यां काल कई जोगी व्है
(146) हाथी रा माथा में दीधां मोतां रो ढेर व्है
(147) छाती बालणी
(148) वात री वात नै करामात री करामात
(149) आई साठी नै बुद्धि न्हाटी।
(150) आंख्यां देख्या परसराम कदी न झूठी होय

प्रतापसिंह का बडग़ांव उपप्रधान बनने पर अभिनंदन

उदयपुर (का. सं.)। संप्रति संस्थान द्वारा आयोजित सादे समारोह में पत्रकार प्रतापसिंह राठौड़ का बड़गांव पंचायत समिति से भाजपा की सीट पर रिकॉर्ड मतों से जीत हासिल कर उपप्रधान बनने पर अभिनंदन किया गया। संप्रति संस्थान के महासिचव डॉ. तुक्तक भानावत, न्यूज 18 के कपिल श्रीमाली, फर्स्ट इंडिया के डॉ. रवि शर्मा तथा खबर सम्राट के फलक सिरोया ने प्रतापसिंह का शॉल, माला, उपरना तथा श्रीफल से संप्रति कार्यालय में भावभीना अभिनंदन किया।

एम.ए., एलएलबी तथा एलएलएम कर चुके प्रतापसिंह ने वर्ष 2006 में पल-पल प्रसन्नता चैनल से पत्रकारिता की शुरूआत करने के बाद इंडिया न्यूज, न्यूज, नेशन में सेवाएं दीं। वर्तमान में वे आज तक के संवाददाता हैं। प्रतापसिंह लेकसिटी प्रेस क्लब के वर्ष 2013-14 में महासचिव तथा 2015-17 में अध्यक्ष रहे तथा वर्तमान में भी अध्यक्ष हैं।

अपना देश : अपनी संस्कृति

जीवन के साथ जवानी और जोबन देते मेवाड़ के मेले

बेणेश्वर, जरगाजी, केलेश्वर, केशरियाजी, गणगौर, चारभुजानाथ, गोपेश्वर, एकलिंगजी मेलों का आंखों देखा हिया लेखा हाल

मैं कितना भागवान हूं भगवान! कितना अच्छा है मेरा गांव! यहां ढाणे पर बैठा बगुला बेवड़े का पानी पीता है। आंबे पर बैठी कोयल बसन्त को हेला मारती है। मोर मई बाबे को खींच लाता है। सूरज वीरा सोना बरसाता है। चन्दा मामा चांदी झेलाता है। चूल्हे पर चढ़ी केलड़ी मुलका कर मेहमान आने का शगुन दे जाती है। पटेल बा की धूणी पर चिलम तम्बाकू की मनवारों में किसी दैनिक अखबार की तरह आखे जग की चोपड़ी बंचती है। यहां दूध्ये दांत वाले डोकरे-डोकरियां हैं। अक्कल दाढ़ वाले फक्कड़ हैं। अखन कुंवारी छोकरियां हैं। रामा बाप है तो नाना रामा उसका बेटा है। रज है तो यहां रतन भी हैं। रोड़ियां हैं तो रोड़ीलाल भी है।

जब कभी गांव में मेले मण्डते हैं तो आसपास का सारा वनखण्ड जाग उठता है। दूर-दूर तक के गांव के गांव उमड़ पड़ते हैं। नाचते-गाते रमकते-झमकते टोले के टोले गांवों, बस्तियों, टपरियों तथा टेकरियों से मेले की हूंस लिये निकल पड़ते हैं। लम्बी-लम्बी राहें तब रात-रात नृत्यों, गीतों और आनन्द-उच्छवों से मगन छगन हो जाती है। दूर-दूर तक गीतों के बोल मधुर गूंज देते सुहाने लगते हैं-

नाथी बेणासरियो मेलो नाथी धीरी रीजे ए
नाथी मेले आपी जाहां नाथी--------
नाथी चुड़ली जोवन जाइहै नाथी------
नाथी भर जोबन में ई है नाथी-------

गीत गाते-गाते ये लोग बेणेश्वर मेले में जा रहे हैं। मेला खुशियों का खेला है। सगे-समधियों का मिलन स्थल है। आवश्यकताओं की पूर्ति का केन्द्र है। मेला जीवन तो देता ही है, जवानी और जोबन भी देता है।

माघ शुक्ला पूर्णिमा को भरने वाला बेणेश्वर मेला भीम, जाखम व माही नदी का संगम स्थल है। एक ऐसा लोकतीर्थ है जहां राजस्थान, मध्यप्रदेश और गुजरात से सैकड़ों की तादात में लोग इकट्ठे होते हैं। यह ऐसा स्थान है जहां स्नान, मुण्डन और तर्पण तीनों से पुण्य मिलता है। डूंगरपुर जिले की आसपुर तहसील के नवातपुरा स्थान का यह मेला खासतौर से आदिवासियों का बड़ा धार्मिक और आध्यात्मिक मेला है। इसके पास ही साबला गांव में सन्त मावजी का मानिन्दा मठ। एकादशी को यहां के पीठाधीश अपने समस्त वैभव और शाही ठाठबाट से मेले में आते हैं और मावजी की आगम वाणियों के वाचन के साथ अनेक भविष्यवाणियां करते हैं।

इससे भिन्न किस्म का एक मेला जरगाजी का भरता है। यह मेला शिवरात्रि को भरता है उदयपुर से 35 किलोमीटर दूर गोगुन्दा के पास जिसमें मुख्यत: रामदेवजी के भक्त कामड़, बलाई, रेगर, चमार, मेघवाल, मोग्या आदि भाग लेते हैं और रात्रि जागरण करते हैं। जरगा रामदेवजी का प्रमुख भक्त बलाई था जो घोड़े का चरवादार बन रामदेवजी की सेवा में रहा। एकबार रामदेवजी के साथ जरगा कहीं परचा देने जा रहा था। देर रात होने से रामदेवजी नहीं लौटे। कुछ दिनों बाद उन्हें जरगा याद आया तो वे लौटे तब तक जरगा व घोड़ा दोनों निर्जीव हो गये।

काठ के बने जरणा व घोड़े को अपने आलम से रामदेवजी ने सरजीवित किया और वर मांगने को कहा। जरगा ने यही चाहा कि रामदेवजी के साथ उसका भी नाम रहे। तब रामदेवजी ने उसी स्थान पर प्रतिवर्ष मेला भरने को कहा कि इसमें नाम तो जरगा का रहेगा और धाम मेरी चलेगी। जरगा के नाम से ही तबसे मेला भरता है। यहीं कांचलिया पंथ की खास धूणी भी कही जाती है। मेले के आसपास का इलाका बड़ा चमत्कारी और धार्मिक कहा जाता है। कई प्रकार की किवदंतियां भी इधर सुनने को मिलती हैं। इधर के घने जंगलों में कई तपस्वी भी ऊंची तपस्या कर चुके हैं। जड़ी-बूटियों की दृष्टि से भी यह क्षेत्र कम महत्त्वपूर्ण नहीं है।

वैशाखी पूर्णिमा पर कानोड़ से आठ किलोमीटर दूर लूणदा गांव के पास गोमती के किनारे केलेश्वर महादेव का मेला भरता है। यहां गोमती का मुहाना है। आगे जाकर इसी नदी को बांधकर जयसमंद का निर्माण हुआ। इस मेले में अधिकतर मीणे भाग लेते हैं। यहीं वे अपने पितरों का तर्पण करते हैं।

इस नदी में स्नान करने से कोढ़ जाती रहती है। कहते हैं, महाराणा कुंभा ने भी जब उन्हें कोढ़ हुई, यहां आकर स्नान किया तो वे ठीक हो गए। यहां कोढ़िये वृक्ष भी हैं। साहित्यसेवी विपिन जारोली ने बताया कि इन वृक्षों में फूंक देने से पानी झरता है। यहीं पुराना केसरियाजी का मन्दिर है जिसकी सेवा पूजा आदिवासी करता है। यह चमत्कार ही कहा जाएगा कि भयंकर गर्मी में जब पूरी नदी सूख जाती है पर पूर्णिमा को ज्योंही मेला भरता है, इसमें पानी भर आता है। ग्रामीण वातावरण से ओतप्रोत यह बहुत पुराना मेला है।

चैत्रकृष्णा अष्टमी-नवमी को उदयपुर से 64 किलोमीटर दूर पहाड़ियों के बीच धुलेव नामक छोटी सी नदी के किनारे केशरियाजी का बड़ा मोटा मेला लगता है। केशरियाजी सारे देश का एक ही ऐसा मंदिर है जहां जैन, वैष्णव, शैव, भील सभी इसकी मूर्ति की समान भाव से पूजा करते हैं। कहते हैं, पहले यह प्रतिमा डूंगरपुर इलाके के आसपुर बड़ोद में थी जहां से सुरक्षा की दृष्टि से भक्तगण कावड़ में यहां लाये। यहां पगल्याजी पर खड़ी मूर्ति कहीं गायब हो गई। ढूंढ़ते-ढूंढ़ते पता चला कि जंगल में बांसों की झाड़ी में मूर्ति पर गाय का दूध झर रहा है। रात को गाय के मालिक को सपना आया जिसमें कहा गया कि मेरे आश्रम के निकट म्लेच्छों ने गोवध किया था तब गायों के जो घाव लगे वे मेरे शरीर पर उघड़ आये हैं तब एक सेठ ने मन्दिर बनवाकर मूर्ति की प्रतिष्ठा की। यह मूर्ति कमर के पास से आज भी खण्डित है।

काले पत्थर की मूर्ति होने से भील कालाजी कहते हैं। इन लोगों की कालाजी के प्रति बड़ी श्रद्धा और आस्था है। कालाजी की आण दिलाने पर भील कभी झूठ नहीं बोलेंगे। मेले में सबसे अधिक भील ही इकट्ठे होते हैं। यहीं भील छोकरे-छोकरियां अपनी पसंद का जीवनसाथी चुन कर जंगलों में भाग जाते हैं और उसके बाद विवाह बंधन में बंधते हैं। रात-रात भर भीलों के समूह नृत्य गीत में मगन मस्त रहते हैं।

गणगौर पर भरने वाला गोगुन्दा का ग्रामीण मेला भी बड़ा रंगीन और कलापूर्ण होता है। यह मेला पूरी रात चलता है। संध्या प्रारंभ होते गणगौर ईसर की सवारी निकलती है। मेला आंगन में स्त्रियां गैर घूमरें लेती हैं। गणगौर घूमर के गीत गाती हैं फिर रात को आदिवासी स्त्री-पुरुष ठसके-मसके होकर पूरी रात गीत नृत्य की गम्मत में निकलते हैं। गोगुन्दा के आसपास का पहाड़ी जंगली वातावरण इस दिन एक विशेष कला और संस्कृतिपूर्ण नजारे में जैसे नजर बंद हो जाता है।

भादवा सुदी ग्यारस को गढ़बोर में चारभुजाजी का विशाल मेला लगता है। नाथद्वारा से 36 किलोमीटर दूर गढ़बोर एक छोटा सा गांव है परन्तु चारभुजाजी की चमत्कारी मूर्ति से यह स्थान भी मेवाड़ के चार प्रमुख धामों में है। यहां का पुजारी गुजर है। कहते हैं कि शूरा नामक गूजर गायें चराने आता गढ़बोर के पहाड़ों में बस गया तब साधु वेश में भगवान चारभुजानाथ ने गायों का दूध पीना शुरू किया। इस पर ग्वाला बिगड़ा और गाली पर उतर आया तो उसकी जीभ चिपक गई। बोलती बंद हो गई। जब उसने साधु की ओर देखा तो उसे दूध-चोर भगवान चारभुजाजी दिखाई दिये जो शंख, चक्र, गदा व पदम् धारण किये थे। ऐसे चमत्कारी और कई किस्से कहानी हैं तभी तो मेले की धूम और धाम बढ़ी है। चारभुजाजी निपूतियों को पूत देते हैं अत: मेले के अवसर पर कई बालकों के झडूल्ये उतारे जाते हैं।

शिवरात्रि को लगने वाला आदिवासियों का एक शुद्ध मेला झाड़ोल तहसील के खाखड़ गांव में गोपेश्वर महादेव मन्दिर के वहां भरता है। आदिवासी जनजीवन का यह टीपीकल मेला पिछले कई वर्षों की उपलब्धि है। पूर्व में मैं जब इस मेले में विजय वर्मा के साथ गया तो आदिवासियों की ठेठ संस्कृति के ठाठ लिए आदिम गंधी संस्कृति से सराबोर हो गया। वर्मा साहब ने तो कहा भी कि आदिवासियों के मेलों में भी अब आदिवासी संस्कृति की शुद्धता देखने को नहीं मिलती। ऐसी स्थिति में अब ऐसे मेले ही आदिम संस्कृति का अच्छा सुख दे सकते हैं। घूमरा नाच में लीन आदिवासी घेरों को जब हमने निकट से देखा तो उनके अपने गीत-बोलों के बीच हमारे जाते ही जब ये बोल जुड़ गये तो मैं उनके बुद्धि चातुर्य और प्रत्युत्पन्न मति दृष्टि का कायल हो गया और सोचने लगा- कहां ये पिछड़े! निरक्षर! हेय और त्याज्य! कहीं इनके बहाने हम स्वयं ही तो वैसे नहीं हुए जा रहे हैं? पंक्तियां थीं-

ये तो बरमा साब आविया घरियाल बाजै
ये तो टेपरे कार लाया घरियाल बाजै
ये तो चमको फलको पाड़े घरियाल बाजै
ये तो फोटू म्हांणे पाड़े घरियाल बाजै।

शिवरात्रि को ही भरने वाला एक मेला एकलिंगजी का है। एकलिंग भगवान मेवाड़ के अधिपति और महाराणा उनके दीवान कहे जाते हैं। इस मन्दिर की व्यवस्था के लिए महाराणा खेता ने पनवाड़, लाखा ने चीरवा तथा मोकल ने बांधनवाड़ा व रामा गांव भेंट किये थे। महाराणा कुम्भा ने पूजा व्यवस्था के लिए नागदा, कठडावण, मलखेड़ा और भीमाणा गांव दिये। मन्दिर में कई शिलालेख हैं। इस दृष्टि से भी इसका विशेष प्राचीन महत्व और माहात्म्य है।

मैंने ये सारे मेले देखे हैं। इन सब मेलों की अपनी खासियत, छवि, छटा और आस्था विश्वास से जुड़े सदाचारी आख्यान हैं जो आज भी जीवन की शाश्वत होती हुई धारा की पवित्रता और इहलोक परलोक की सद्गति मति का सेतु देते हैं। छोटे-छोटे गांवों के ये बड़े-बड़े मेले न जाने कितनी पीढ़ियों को उद्धार और उजलास देने वाले हैं। इन मेलों में मैला होकर ही आदमी जीवन के नाना खेलों-झमेलों से उऋण होता है, यही हमारी जीवन संस्कृति का अटूट और अखूट चैतन्य विश्वास है।

लोकदेव मानाजी-चोखाजी का चमत्कार

गूना-मेनू की तरह मानाजी-चोखाजी दोनों भाई थे जो लोकदेवता के रूप में ख्यात हैं। मूलत: इनका स्थान धरियावद-बांसवाड़ा रोड़ पर स्थित नरवाली के पास था। रविवार को इनकी धाम चलती थी तब सुबह से ही दु:खियारे व्यक्तियों की वहां भीड़ एकत्र हो जाती थी। सभी लोग महूड़े के वृक्ष से लेकर दूर तक बैठे रहते थे।

इतने में सुबह केवल एक लंगोटी धारण किया मानाजी का मीणा भोपा आता। उसमें मानाजी का भाव होते ही वह तीन गुलांछी खाता और महूड़े के पास रखी तलवार लेकर प्रत्येक रोगी के उस स्थान पर पटकता जहां-जहां दर्द रहता। जिस स्थान पर तलवार पड़ती वह स्थान कट जाता।

जैसे किसी के पांव में तकलीफ है तो उस स्थान से वह पांव अलग हो जाता। इससे कहीं खराब दिखाई देता खून पड़ा रहता तो कहीं कीड़े कुलबुलाते नजर आते। बीमार व्यक्ति मृतकों की तरह पड़े रहते। वे न कराहते न चिल्लाते। उन्हें किसी तरह का कोई दर्द नहीं होता न अपने होने का भान ही रहता।

दोपहर को दूसरा मीणा भोपा आता जो चोखाजी का होता। उसके शरीर में चोखाजी का प्रवेश होता तब वह उसी महूड़े के वृक्ष की डाली पर टंगी जंजीर को लेकर उन प्रत्येक मरीजों के उन अंगों पर फिराता जो मानाजी द्वारा अलग कर दिये जाते। इससे वे अंग स्वस्थ हालत में जुड़ जाते और मरीज तत्काल वहां से उठ अपने घर की राह लेता।

लोकदेवता कल्लाजी राठौड़ के सेवक सरजुदासजी ने कोई 50 वर्ष पूर्व यह चमत्कार देखा था। 18 सितम्बर 1983 को उन्होंने बताया कि उसके बाद दोनों भोपे-भाइयों के आपस में अनबन होने से यह धाम बिखर गई और नतीजा यह हुआ कि चोखाजी तो वहीं रहे और मानाजी का भोपा प्रतापगढ़ के पास ढरमू गांव चला गया तबसे जोड़-तोड़ का यह इलाज बन्द होगया। सरजुदासजी ने तो दांत विहीन लोगों के मुंह में बत्तीसी आई तक देखी।

- म. भा.

एचडीएफसी बैंक को 8760 करोड़ का शुद्ध लाभ

उदयपुर (विज्ञप्ति)। निजी क्षेत्र के सबसे बड़े एचडीएफसी बैंक का चालू वित्त वर्ष की दिसंबर में समाप्त तीसरी तिमाही के नतीजे घोषित कर दिए। इस दौरान कंपनी का एकीकृत शुद्ध लाभ 14.36 फीसदी बढ़कर 8760 करोड़ रुपए पर पहुंच गया। एकल आधार पर बैंक का शुद्ध मुनाफा 18.09 फीसदी बढ़कर 8758.29 करोड़ रुपए रहा। एकल आधार पर तिमाही के दौरान बैंक की कुल आय बढ़कर 37,522 करोड़ रुपए पर पहुंच गई, जो इससे पिछले वित्त वर्ष की इसी तिमाही में 36,039 करोड़ रुपए रही थी।

बैंक के नए मुख्य कार्यपालक अधिकारी (सीईओ) और प्रबंध निदेशक शशिधर जगदीशन की अगुवाई में यह पहला तिमाही नतीजा है। इस दौरान बैंक की संपत्ति की गुणवत्ता में सुधार हुआ। तिमाही के दौरान बैंक की सकल गैर निष्पादित आस्तियां (एनपीए) कुल ऋण का 0.81 फीसदी रही, जो इससे पिछले वित्त वर्ष की इसी तिमाही में 1.42 फीसदी तथा पिछली सितंबर तिमाही में 1.08 फीसदी पर थी।

1469.10 के स्तर पर खुलने के बाद एचडीएफसी बैंक का शेयर 1.75 अंक यानी 0.12 फीसदी गिरकर 1467 के स्तर पर बंद हुआ था। मौजूदा समय में एचडीएफसी बैंक का बाजार पूंजीकरण (बाजार हैसियत) 80.9 खरब रुपए है। पिछले साल नवंबर में भारत में निजी क्षेत्र के सबसे बड़ा बैंक, एचडीएफसी बैंक का बाजार पूंजीकरण पहली बार आठ लाख करोड़ रुपए के पार हो गया था। इस उपलब्धि को हासिल करने वाला यह देश का पहला बैंक बना।

घुटना प्रत्यरोपण करवा चुके लोगों ने किया रैम्प वॉक

उदयपुर (विज्ञप्ति)। पारस जे.के. हॉस्पिटल व एनपीसीएल द्वारा आयोजित समारोह में

एनपीसीएल के वे कर्मचारी जिनका पूर्व में डॉ. आशिष सिंघल ने जोड़ प्रत्यारोपण किया था, उनके द्वारा रैम्प पर वॉक किया गया। रैम्प वॉक में 40 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया। वे आसानी से बिना किसी सहारे के रैम्प वॉक कर रहे थे। जोड़ प्रत्यारोपण से पूर्व ये कर्मचारी दैनिक दिनचर्या के कार्यों के लिए भी पराश्रित हो गये थे। उनका यह चलना ही उनकी वर्तमान स्थिति को बता रहा था कि उनका जीवन अब कितना सुखद है।

कार्यक्रम की शुरुआत में डॉ. आशिष सिंघल ने उपस्थित जनों को जोड़ों में दर्द, इसकी रोकथाम व उपचार के की जानकारी देते हुए बताया कि स्वस्थ दिनचर्या, नियमित व्यायाम एवं संतुलित खानपान अपनाकर जोड़ों में होने वाले दर्द को टाला जा सकता है। यदि जोड़ों में लगातार दर्द बना रहे तो जोड़ प्रत्यारोपण के अलावा कोई अन्य विकल्प नहीं बचता है जो कि पूर्णतया सुरक्षित व सफल है। इसके बाद पुन: व्यक्ति दर्द रहित जीवन जीता है।

रैम्प वॉक में भाग लेने वाले मरीजों ने कहा की 2 वर्ष पूर्व डॉ. आशिष से जोड़ प्रत्यारोपण करवाया था। इसके बाद आज तक कोई तकलीफ नहीं है। जीवन सुखमय व दर्द रहित हो गया है। प्रतिदिन वॉक पर जाना व अपने दैनिक कार्यों से लेकर सभी कार्य स्वंय बिना किसी की सहायता के करते हैं। कार्यक्रम के अंत में एनपीसीएल ने पारस जे.के. हॉस्पिटल की टीम का आभार व्यक्त किया।

जेके टायर और हुण्डई मोटर में गठबंधन

उदयपुर (विज्ञप्ति)। जेके टायर एण्ड इण्डस्ट्रीज लि. हुण्डई मोटर इण्डिया के साथ सर्वाधिक बिक्री वाली एसयूवी क्रेटा के टायर्स के लिए विशेष टायर पार्टनर बन गया है। वर्षों से जेके टायर ने उच्च तकनीकी उत्पादों को पेश किया है जो भारतीय सड़कों के लिए सबसे उपयुक्त हैं। इस गठबन्धन के माध्यम से जेके टायर अपने यूएक्स रॉयल 215/60 आर17 रेडियल टायर के साथ हुण्डई क्रेटा के टॉप-एण्ड वेरिएंट में सर्वश्रेष्ठ-इन-क्लास तकनीक, अद्वितीय प्रदर्शन, कम्फर्ट और हैंडलिंग प्रदान कर रहा है। अपने 5-रिब एसीमेट्रिक डिजाइन, वेरिएबल ड्राफ्ट ग्रूव टेक्नोलॉजी, स्टेबल शाउल्डर ट्रेड ब्लॉक, वेफल ग्रूव और एरो विंग डिजाइन के साथ, जेके टायर का यूएक्स रॉयल 215/60 आर17 टायर हुण्डई क्रेटा के लिए एकदम फिट है। टायर क्रिस्प हैंडलिंग और सभी गति पर कम शोर के साथ बेहतर सवारी आराम देने में सक्षम है।

कमल नाहटा जीतो उदयपुर चेप्टर के मुख्य सचिव मोनोनीत

उदयपुर (विज्ञप्ति)। जैन इंटरनेशनल ट्रेड ऑर्गेनाइजेशन (जीतो) उदयपुर चैप्टर के नवनिर्वाचित अध्यक्ष राज सुराणा ने

कमल नाहटा को मुख्य सचिव मनोनीत किया है। इसी के साथ वर्ष 2020-22 के लिए मार्गदर्शक परिषद में 18 सलाहकार शामिल किए गए हैं जो समाज के उत्थान के लिए विभिन्न आयामों पर मंथन करेंगे।

जीतो प्रवक्ता डॉ. तुक्तक भानावत ने बताया कि अध्यक्ष राज सुराणा ने कार्यकारी परिषद में निवर्तमान अध्यक्ष शांतिलाल मेहता सहित उपाध्यक्ष पद पर दिलीप तलेसरा, पीयूष मारू, शांतिलाल वेलावत, मुख्य सचिव पद पर कमल नाहटा, सचिव पद पर सीए प्रतीक हिंगड़, श्रुति खींचा, सीए प्रीति नाहर, कोषाध्यक्ष पद पर सीए राजेन्द्र जैन को शामिल किया गया है। परिषद में अर्जुनलाल खोखावत, अनिल नाहर, आलोक पगारिया, दिनेश जैन, देवेन्द्र कच्छारा, निर्मल पोखरना, नितुल चंडालिया, राजेश खमेसरा, राजेश जैन, राजेश खमेसरा (द्वितीय), प्रतीक नाहर सदस्य चुने गए हैं। इसी तरह विमल पाटनी, शांतिलाल मारू, राजकुमार बापना, राजकुमार फत्तावत, किशोर चोकसी, गजेन्द्र भंसाली, आरके चतुर, लक्ष्मीलाल धाकड़, माणिक नाहर, लक्ष्मण सिंह कर्णावट, हेमंत बोहरा, अनिश धींग, भरत बम्ब, जयंत कोठारी, विनोद फांदोत, महावीर चपलोत, रोहित मोटावत व शांतिलाल सिंघवी को मार्गदर्शक परिषद में शामिल किया है।

जागरूक अभियान

उदयपुर (विज्ञप्ति)। एचडीएफसी बैंक लिमिटेड ने कोविड-19 के नए टीके (वैक्सीन) के नाम पर की जा रही धोखाधड़ी से लोगों को जागरूक किया है। बैंक के अनुसार न्यू कोविड वैक्सीन के नाम पर धोखाधड़ी की जा रही है तथा इसका भुगतान करने या वित्तीय विवरण मांगा जा रहा है। इस तरह के घोटालों से सतर्क रहें, क्योंकि हैल्थवर्कर या सरकारी कर्मचारी कभी भी योग्यता मापदण्ड के अनुसार भुगतान के या वित्तीय विवरण के बारे में पूछताछ नहीं करते। बैंक ने इस बाबत फेसबुक पर एक ऑडियो अभियान भी जारी किया है। यह अभियान दोनों कोविड महामारी से लड़ने और ऑनलाइन धोखाधड़ी करने वालों के शिकार होने से बचाने के लिए सतर्क रहने की आवश्यकता को रेखांकित करता है।

महाजीवन प्लस प्लान लॉन्च

उदयपुर (विज्ञप्ति)। बैंक ऑफ बड़ोदा एवं यूनियन बैंक ऑफ इंडिया द्वारा प्रमोटेड, इंडियाफर्स्ट लाईफ इंश्योरेंस कंपनी लि. (इंडियाफर्स्ट लाईफ) ने इंडियाफर्स्ट लाईफ महाजीवन प्लस प्लान लॉन्च किया।

इंडियाफर्स्ट लाईफ इंश्योरेंस कंपनी लि. के डिप्टी सीईओ रुषभ गांधी ने कहा कियह नॉन-लिंक्ड, पार्टिसिपेटिंग, व्यक्तिगत, लिमिटेड पे, मनी बैक एन्डोमेंट लाईफ इंश्योरेंस पॉलिसी 12 सालों की अल्प भुगतान प्रतिबद्धता के साथ 15 से 20 सालों के दीर्घकाल तक सुरक्षा प्रदान करती है। पॉलिसी अवधि में यह पॉलिसी अनेक मनी बैक देकर व्यक्ति की लिक्विडिटी की जरूरत का ख्याल रखती है। इसके द्वारा, जरूरत के अनुरूप अगले वार्षिक प्रीमियम की राशि की व्यवस्था के लिए मनीबैक विकल्पों का उपयोग करने का अवसर मिलता है। पॉलिसीधारक को मैच्योरिटी बेनेफिट एवं एक्रूड सिंपल रिवर्ज़नरी बोनस मिलेगा, जो हर साल घोषित होगा और यदि पॉलिसी अवधि के अंत में टर्मिनल बोनस की घोषणा होगी, तो वह भी मिलेगा।

जेके टायर के कांकरोली प्लांट ने नेशनल वाटर अवार्ड जीता

उदयपुर (विज्ञप्ति)। जेके टायर एंड इंडस्ट्रीज लि. संवहनीय वृद्धि में हमेशा आगे रहा है। अपनी नैतिकता के अनुसार, कंपनी ऊर्जा के उपयोग में अपनी अग्रणी स्थिति बनाये रखने और अपना कार्बन फुटप्रिंट कम करने की पूरी कोशिश कर रही है। जेके टायर के इन प्रयासों को हाल ही में कंफेडरेशन ऑफ इंडियन इंडस्ट्री (सीआईआई) से दो प्रतिष्ठित पुरस्कारों के साथ सम्मानित किया गया था।

जेके टायर एंड इंडस्ट्रीज लि. के मैन्युफैक्चरिंग डायरेक्टर अनिल मक्कड़ ने कहा कि कांकरोली स्थित जेके टायर के प्लांट को जल संरक्षण में '3एम' एप्रोच- मेजर, मॉनिटर एंड मैनेजमेन्ट के कारण जल संरक्षण के लिये उत्कृष्ट प्रयासों हेतु नेशनल वाटर अवार्ड मिला है। पुरस्कार की घोषणा 14वें सीआईआई नेशनल अवार्ड्स फॉर एक्सीलेंस इन वाटर मैनेजमेन्ट 2020 के दौरान हुई थी।

लादूलाल अध्यक्ष,प्रकाश मंत्री मनोनीत

उदयपुर (विज्ञप्ति)। जैन सोश्यल ग्रुप अर्हम् की साधारण सभा की बैठक बड़ी रोड़ स्थित ऐश्वर्या रिसोर्ट में आयोजित की गई। बैठक में सर्वसम्मति से संस्थापक अध्यक्ष आलोक पगारिया ने वर्ष 2021-2023 की कार्यसमिति की घोषणा की।

इसमें अध्यक्ष लादूलाल मेड़तवाल, उपाध्यक्ष महेन्द्र सिंघवी, मंत्री प्रकाश सुराणा, सहमंत्री रमेश डागलिया, कोषाध्यक्ष भंवर पोरवाल सहित कार्यसमिति सदस्य के रूप में भगवती सुराणा, रमेश सिंघवी, ओमप्रकाश पोरवाल, कमल नाहटा, निर्मल कुणावत, सुरेश चोरडिया, कमल कर्णावट, अभिषेक पोखरना को मनोनीत किया गया। साथ ही विभिन्न समितियों के प्रभारियों की घोषणा की। इससे पूर्व अध्यक्ष अर्जुन खोखावत ने सभी का स्वागत किया। संचालन अभिषेक पोखरना ने व धन्यवाद भगवती सुराणा ने ज्ञापित किया।

मेधावी छात्र-छात्राएं सम्मानित

उदयपुर (विज्ञप्ति)। तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम द्वारा महाप्रज्ञ विहार में मेधावी छात्र-छात्रा सम्मान समारोह-2020 का आयोजन शासनश्री साध्वी मधुबाला, साध्वीश्री मंजूरेखा व साध्वीश्री शोभाग्यश्री के सान्निध्य में आयोजित किया गया। अध्यक्ष मुकेश बोहरा ने तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के द्वारा किये जा रहे कार्यों की जानकारी दी। तेरापंथी सभा के अध्यक्ष अर्जुन खोखावत ने कहा कि इस तरह के प्रोग्राम करने से समाज की प्रतिभाओं को आगे आने का मौका मिलता है। डॉ. आशीष पोरवाल ने तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम की विभिन्न शिक्षा परियोजना की जानकारी दी। साध्वीश्री मंजुरेखा ने बच्चो को आगे पढ़ने और बढ़ने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम में 26 छात्र-छात्राओं को सूर्यप्रकाश मेहता, सभा मंत्री विनोद कच्छारा, तेयुप अध्यक्ष अजित छाजेड़, कंचन देवी व विमला बोहरा ने सम्मानित किया गया। कपिल इंटोदिया, अनिता मेहता, ज्योति नाहर, कुणाल गांधी तथा पंकज सुराणा भी मौजूद थे।

मुसीबत में है व्हाट्सप

-डॉ. वेदप्रताप वैदिक-

व्हाटसाप की सबसे बड़ी खूबी यही है कि आपकी बात या संदेश का एक शब्द भी न कोई दूसरी व्यक्ति सुन सकता है और न पढ़ सकता है। आतंकवादी, हत्यारे, चोर-डकैत, दुराचारी और भ्रष्ट नेता व अफसरों के लिए यह गोपनीयता वरदान सिद्ध होती है। मेरा मानना है कि जिन लोगों का जीवन खुली किताब की तरह होता है, उनके यहाँ गोपनीयता नाम की कोई चीज़ ही नहीं होती।

आजकल व्हाट्सप को दुनिया के करोड़ों लोग रोज इस्तेमाल करते हैं। वह भी मुफ्त! लेकिन पिछले दिनों लाखों लोगों ने उसकी बजाय 'सिग्नल', 'टेलीग्राम' और 'बोटिम' जैसे माध्यमों की शरण ले ली और यही क्रम कुछ महिने और भी चलता रहता तो करोड़ों लोग 'व्हाट्सप' से मुंह मोड़ लेते।

ऐसी आशंका इसलिए हो रही है कि व्हाट्सप की मालिक कंपनी 'फेसबुक' ने नई नीति बनाई है जिसके अनुसार जो भी संदेश व्हाट्सप से भेजा जाएगा, उसे फेसबुक देख सकेगा याने जो गोपनीयता व्हाट्सप की जान थी, वह निकलने वाली थी।

व्हाटसाप की सबसे बड़ी खूबी यही थी और जिसका बखान उसे खोलते ही आपको पढ़ने को मिलता है कि आपकी बात या संदेश का एक शब्द भी न कोई दूसरी व्यक्ति सुन सकता है और न पढ़ सकता है। यही वजह थी कि देश के बड़े-बड़े नेता भी आपस में या मेरे-जैसे लोगों से दिल खोलकर बात करना चाहते हैं तो वे व्हाट्सप का ही इस्तेमाल करते हैं। इसका दुरुपयोग भी होता है। आतंकवादी, हत्यारे, चोर-डकैत, दुराचारी और भ्रष्ट नेता व अफसरों के लिए यह गोपनीयता वरदान सिद्ध होती है।

इस दुरुपयोग के विरुद्ध सरकार 'व्यक्तिगत संवाद रक्षा कानून' ला रही है, जो व्यक्तिगत स्वतंत्रता और गोपनीयता की रक्षा तो करेगा ही लेकिन संविधान विरोधी बातचीत या संदेश को पकड़ सकेगा। मैं आशा करता हूं कि इस महत्वपूर्ण कानून को बनाते वक्त हमारी सरकार और संसद वैसी लापरवाही नहीं करेगी, जैसी उसने कृषि-कानूनों के साथ की है।

अभी भी व्हाट्सप पर स्वास्थ्य-जांच रपटें, यात्रा और होटल के विवरण तथा व्यापारिक लेन-देन के संदेशों को भेजने की खुली व्यवस्था है। 'फेसबुक' चाहती है कि 'व्हाट्सप' की समस्त जानकारी का वह इस्तेमाल कर ले ताकि उससे वह करोड़ों रुपए कमा सकती है और दुनिया के बड़े-बड़े लोगों की गुप्त जानकारियों का खजाना भी बन सकती है।

व्हाटसाप इस नई व्यवस्था को 8 फरवरी से शुरु करनेवाला था लेकिन लोगों के विरोध और क्रोध को देखते हुए उसने अब इसे 15 मई तक आगे खिसका दिया है। फेसबुक को व्हाट्सप की मिल्कियत 19 अरब डॉलर में मिली है। वह इसे कई गुना करने पर आमादा है। उसे पीछे हटाना मुश्किल है लेकिन 'यूरोपियन यूनियन' की तरह भारत का कानून इतना सरल होना चाहिए कि नागरिकों की निजता पूरी तरह से सुरक्षित रह सके लेकिन मेरा अपना मानना यह है कि जिन लोगों का जीवन खुली किताब की तरह होता है, उनके यहाँ गोपनीयता नाम की कोई चीज़ ही नहीं होती। वे किसी फेसबुक से क्यों डरें ?

गीतांजली हॉस्पिटल में मुंह के कैंसर का सफल ऑपरेशन

उदयपुर (विज्ञप्ति)। गीतांजली मेडिकल कॉलेज एवं हॉस्पिटल में कैंसर विभाग एवं हृदय रोग विभाग के अथक प्रयासों से रोगी को नया जीवन मिला है।

बाँसवाड़ा निवासी 40 वर्षीय रोगी को मुंह में कैंसर के चलते चिकित्सालय में भर्ती कराया गया। इसका इलाज कमांडो सर्जरी था। सर्जरी के दौरान हृदय की पम्पिंग सिर्फ 20 प्रतिशत चल रही थी जिस कारण ऑपरेशन करना बहुत रिस्की था। ऐसे में कैंसर सर्जन टीम के साथ कार्डिक टीम द्वारा हृदय को ऑपरेशन शुरू होने से ऑपरेशन होने के बाद तक नियंत्रित रखा गया। पांच घंटे तक चली कमांडो सर्जरी में रोगी के ट्यूमर और नैक नोड्स को हटाया गया। ऑपरेशन के तीन दिन बाद रोगी को आई.सी.यू. से वार्ड में शिफ्ट कर दिया गया। रोगी के ऑपरेशन को तीन माह हो चुके हैं। रोगी अभी स्वस्थ है और मुंह से भोजन भी कर रहा है। ऑपरेशन में कार्डियोलॉजिस्ट डॉ. डैनी मंगलानी, कैंसर सर्जन डॉ. आशीष जाखेटिया, डॉ. अरुण पाण्डेय, एनेस्थेटिस्ट डॉ. नवीन पाटीदार, ओ.टी स्टाफ, आई.सी.यू स्टाफ, सी.सी.यू स्टाफ का योगदान रहा।

यादों के एल्बम.....

(पृष्ठ तीन का शेष)

जैन साहब के कई पत्रों में भाई साहब को लिखा एक पत्र मेरे पास सुरक्षित है जो मुझे बहुत कुछ कहता, उनकी यादों को खंगालता प्रेरित करता है। जब उन्होंने महाविद्यालय प्रारम्भ किया तब वहां पढ़े छात्रों को खुशखबर देते आर्थिक सहयोग करने की भावना व्यक्त की थी। यह लघु पत्र सन् 1974 के 5 अगस्त को भाई साहब को लिखा गया था। आह्वान एवं समर्पण सम्बोधन लिए वह पत्र इस प्रकार था- 'मेरे प्यारे डॉ. भानावतजी,

आपकी वर्षों की भावना (कानोड़ में महाविद्यालय की) मैंने खाली हाथ पूर्ण की है। आप आइये मातृ संस्था को तत्काल एक हजार रूपये की भेंट चढ़ाइये और आजीवन सदस्य बन, समिति का निर्माण कर अपनी सेवाओं को समर्पण करियेगा। राज्य सरकार पांच वर्ष तक मदद नहीं देगी। संस्था के पास इसके लिए अभी कुछ नहीं है। एक लाख रूपये का साल का व्यय है। वृद्धा स्वास्थ्यावस्था वाले मुझको सहयोग कीजियेगा।

आपका

उदय जैन के आशिष

एक दिन तिलकनगर जयपुर में भाई साहब के निवास पर पं. जैन साहब का अचानक पदार्पण सबको आह्लादित कर गया। तब माताजी भी वहीं थीं। उन्हें देख जैन साहब ने भाई साहब से कहा था- 'इनसे पूछो, मैंने कहा था, अपने बच्चों को पढ़ाने भेजो। आपके नानपण का अन्धेरा मिट जाएगा। बच्चे पढ़-लिखकर होशियार होंगे तो आपका जीवन भी सुधर जाएगा और ये आपका नाम रोशन करेंगे।' मां क्या बोलती! तब उसकी आंखों में वैधव्य और असहायपन के आंसू थे। उन्हीं आंखों में मोती से चमकदार आंसू देख तब जैन साहब का हृदय भी भर आया था।

उदयपुर में जब मेरी जैन साहब से भेंट हुई तो उन्होंने मुझे यह किस्सा सुनाया तब मैंने भी उन्हें अपना किंचित सहयोग भेंट किया। उन्होंने कहा, आपका सहयोग भी वहां नरेन्द्रजी ने मुझे कर दिया है। यह सुन मैं भी तब बड़ा ही भावुक होगया था। मैं अधिक कुछ नहीं बोल पाया और गुरुदेव के श्रीचरणों में वह राशि भेंट कर धन्य हुआ।

समय रेल की तेज सफर सा व्यतीत होता न जाने कैसे सबको पीछे छोड़ता चला चलता है। अब उनमें से कोई नहीं है। जैन साहब तो सबसे 27 नवंबर 1977 को ही विदा हो चुके थे।

प्रो. धनेश भाणावत ने बताया कि आजादी के पूर्व से आजादी के बहुत बाद के वर्षों तक कस्बों में खासकर सवर्णों में आड़ीजात, छोटीजात, बड़ीजात, ओछीजात जैसी फिरकापरस्ती का जबर्दस्त माहौल था। भिन्न-भिन्न सम्प्रदाय-संगठन के लोगों के बीच ईर्ष्या-द्वेष की बू होने के कारण एक-दूसरे के अच्छे कामों को भी नकारा दृष्टि से देखते थे और अपनी खीज निकालने के लिए वे उन पर चारित्रिक लांछन लगाने तक में पीछे नहीं रहते थे।

पं. उदय जैन तथा शान्तिचन्द्र बाबेल भी इससे बच नहीं पाये किन्तु आज जब वे हमारे बीच नहीं हैं तो उनके कार्यों का सभी लोग निरन्तर अभाव महसूस करते शिक्षा नगरी में ही शिक्षा का अवमूल्यन हुआ देख रहे हैं। उल्लेखनीय है कि जैन साहब बारहपंथी और बाबेल साहब तेरापंथी सम्प्रदाय के अग्रणी सुश्रावक थे।

दगा किसी का सगा नहीं

- डॉ. दिलीप धींग -

धर्म-साधना से क्या होगा, सरल भाव तो जगा नहीं।
जीवन में सच्चाई रक्खो, दगा किसी का सगा नहीं।।
मन का काँटा कहलाता यह, छल-कपट और मायाचार।
इस काँटे को तुरत निकालो, हल्का होगा मन का भार।
उसका मन सुमन है जिसने, कभी किसी को ठगा नहीं।
जीवन में सच्चाई रक्खो, दगा किसी का सगा नहीं।। 1।।
कुछ ढोंगी बनते-फिरते हैं, उच्च क्रिया के ठेकेदार।
लेकिन माया से हो जाते, सारे धरम-करम बेकार।
छल-कपट से भरे हृदय में, फूल सत्य का उगा नहीं।
जीवन में सच्चाई रक्खो, दगा किसी का सगा नहीं।। 2।।
कथनी-करनी में अन्तर है, छल के साथ पनपता झूठ।
मैत्रीभाव तिरोहित होता, और भरोसा जाता टूट।
तो फिर कैसे मिले सफलता, भाव प्रेम का जगा नहीं।
जीवन में सच्चाई रक्खो, दगा किसी का सगा नहीं।। 3।।
ना चलता है, ना सुख देता, धोखे का कोई व्यापार।
इसकी टोपी उसके सिर पर - रखते, करते बण्टाढार।
राम बचाए इन छलियों से, इनका कोई सगा नहीं।
जीवन में सच्चाई रक्खो, दगा किसी का सगा नहीं।। 4।।
मायावी मानी भी होता, और कभी लोभी-गुस्सैल।
नाटक करता और दिखाता, माया के मायावी खेल।
छलमय जीवन ज्ञान-ध्यान के - दीपों से जगमगा नहीं।
जीवन में सच्चाई रक्खो, दगा किसी का सगा नहीं।। 5।।
कुटिल-जटिल जो होते करते, विविध भाँति दुराव-छिपाव।
उनके मन के बाँकेपन से, पैदा होते कष्ट-तनाव।
उन कष्टों को वो क्या जाने, जिसको धोखा लगा नहीं।
जीवन में सच्चाई रक्खो, दगा किसी का सगा नहीं।। 6।।
दान-पुण्य का फल कम होता, भक्ति होती नामंजूर।
मायाचारी के जीवन से, अपने भी हो जाते दूर।
प्रभु-साम्राज्य मिलेगा उनको, जिनके दिल में दगा नहीं।
जीवन में सच्चाई रक्खो, दगा किसी का सगा नहीं।। 7।।
जंगल में चालाक लोमड़ी, चालाकी से दु:ख पाती।
सौ-सौ चूहे खाकर बिल्ली, तीरथ करने को जाती।
चालाकी करने वालों का, सोया किस्मत जगा नहीं।
जीवन में सच्चाई रक्खो, दगा किसी का सगा नहीं।। 8।।
देखो, छोटे-छोटे बच्चे, कितने प्यारे कितने अच्छे।
सबके मन को हर्षित करते, क्योंकि मन के होते सच्चे।
सीधे-सच्चे सरल चित्त में, पेड़ पाप का उगा नहीं।
जीवन में सच्चाई रक्खो, दगा किसी का सगा नहीं।। 9।।
जहाँ सरलता, वहाँ धर्म है, अरे! सरलता स्वयं धर्म है।
सद्गुण-अर्जन का साधन यह, आत्म-शुद्धि का मूल मर्म है।
जोड़-तोड़ करने वालों का, चित्त धर्म में लगा नहीं।
जीवन में सच्चाई रक्खो, दगा किसी का सगा नहीं ।। 10।।
जो निश्छल है, वो प्रांजल है, कलकल बहता नदिया नीर।
प्राची में अरुणोदय जैसे, उनके मन प्रगटे महावीर।
जाग! वक्त की चिड़िया ने भी, खेत अभी तक चुगा नहीं।
जीवन में सच्चाई रक्खो, दगा किसी का सगा नहीं।। 11।।

हमारे पास शब्द रंजन है
आपके पास और भी बहुत कुछ
कृपया सहयोग करें

संरक्षक	11000/
विशिष्ट सदस्य	5000/
आजीवन सदस्य	3000/
शब्दरंजन के सहयात्री	1000/
साहित्यिक चौपाल	500/
वार्षिक संस्थागत	300/
वार्षिक व्यक्तिगत	250/

शब्दरंजन में विज्ञापन सहयोग कर अपने इस पत्र को और अधिक रंगदार, रूपवान तथा समाज विकास का अग्रणी प्रतिनिधि पत्र बनायें।

(**Shabd Ranjan**, UCO BANK, Bhupalpura Branch, Udaipur,
a/c no. 18450210000908, IFSC no. UCBA0001845,
a/c type- Current a/c)

सुविधा और सुरक्षित प्राप्ति के लिए कृपया रचनाएं, समाचार एवं विज्ञापन आदि ई-मेल से भेजें।

shabdranjanudr@gmail.com

मेरी प्रदर्शनधर्मी यात्रा (5)

- देवीलाल सामर -

पिछली किश्त में राजस्थान के भीली क्षेत्र के खट्टे-मीठे सर्वेक्षण की दास्तान पढ़ी। यहां पढ़िये गृहमंत्री गोविन्दवल्लभ पंत द्वारा कला मण्डल को प्रदत्त मध्यप्रदेश के बस्तर क्षेत्र के घने जंगलों के निवासी अबूझमाड़िया से सम्बन्धित रोचक वर्णन।

एकबार एक तहसीलदार ने हिम्मत की तो वह उनके तीर कमान का शिकार बन गया और पुन: लौट कर नहीं आ सका। यही हाल बेगाचेक का है जहां बेगा नाम की एक जाती रहती है परन्तु हमें तो वहां जाना ही था। अगर नहीं जाते तो बेगा जैसी रंगीन जातियों का अध्ययन कैसे करते और उनके जीवन के रंगीन पक्षों की फिल्म कैसे बनाते। हमें यह भी विश्वास था कि ये आदिम लोग करुणाशील होते हैं। अतिथियों की आवभगत करना खूब जानते हैं। वे मानवीय गुणों में हम शहरी लोगों से लाखों गुना अच्छे होते हैं। निश्चित ही उनको समझने में या उनके प्रति व्यवहार में हम शहरियों ने कोई गलती की होगी या उनके आनन्ददायी पक्षों का दुरुपयोग किया होगा।

इससे पूर्व हम प्रसिद्ध विद्वान वेरियर एल्विन के सभी ग्रंथ पढ़ चुके थे। वे भी इन्हीं क्षेत्रों में कहीं रहते हैं, यह भी हमें मालूम था बल्कि हमें यह भी ज्ञात था कि उनकी पत्नी स्वयं एक बेगा स्त्री ही है। हजार ना करने पर भी हम लोगों ने अबूझमाड़ क्षेत्र की ओर प्रयाण कर ही दिया।

हमारी गाड़ी जहां तक जा सकती थी ले गये और फिर उसे वहीं जंगल में छोड़कर आवश्यक सामग्री अपने कंधों पर लादकर हम अबूझमाड़ के पहाड़ों पर चढ़कर पठार पर पहुंच गये। हमें यह भी भलीप्रकार मालूम था कि उधर के लोग चोरी नहीं करते। गाड़ी में रखा हुआ कीमती से कीमती सामान महीनों बाद भी सुरक्षित ही मिलेगा। इसी विश्वास के साथ हम गाड़ी मय अपने कीमती सामान के जंगल में ही छोड़कर आगे की सुध लेते रहे। बेचारा ड्राईवर भी डर के मारे हमारे साथ ही हो लिया।

हम जब अबूझमाड़ पहुंचे तो दूर से ढोल-नगाड़ों के बजने की आवाज आ रही थी। उस वक्त शाम हो चली थी। हम लोग सहमे-सहमे बस्ती की ओर बढ़े। दूर एक नृत्य समूह में कई औरतें और मर्द नाच रहे थे। हमें देखकर वे सहमे और देखते ही देखते जंगलों में विलीन हो गए परन्तु कहीं से कोई अनिष्ट की आशंका नहीं हुई। हम वहीं ठहर गये।

पेड़ के नीचे अपने झोलीडण्डे रख दिये। वह गर्मी का समय था लेकिन किसी प्रकार की छाया की हमें जरूरत नहीं थी। उस दिन का खाना हमारे पास था अत: हमें पकाने की आवश्यकता नहीं हुई। दु:ख इस बात का था कि हमारे पदार्पण के कारण उनका नृत्य बन्द हो गया।

प्रात: हम सहमे-सहमे गांव में पहुंचे। उसके अधिकांश घर तो हमें देखकर खाली होगये थे। एक अधेड़ व्यक्ति वहां था। उसने हमसे इशारों से बात करने की कोशिश की। हमने कहा कि हम उनके साथ नाचने-गाने आये हैं। हम सरकारी अफसर नहीं हैं। वह हमारे आशय को समझ गया। कभी-कभी वह सौदा खरीदने के लिए बस्ती में भी जाता था इसलिए उसे यह भलीप्रकार मालूम हो गया कि हम सरकारी कर्मचारी नहीं हैं जो सरकारी नियमों की पालना कराने हेतु उधर आते हैं। उसे यह विश्वास होगया कि हम उसके किसी प्रकार के रहन-सहन को बुरा नहीं समझते हैं।

वे जहां चाहें रह सकते हैं। जिस जमीन पर चाहें अपनी झोंपड़ी बना सकते हैं। जहां चाहें बीज बो सकते हैं। ऐसे करते दो-तीन दिन में हमारी उससे दोस्ती होगई। हम उसकी ही झोंपड़ी में रहने लगे। उसी जैसे कपड़े भी हमने बनवा लिये और उसके साथ नाचने-गाने में हमने किसी प्रकार की आपत्ति महसूस नहीं की।

इस अबूझमाड़ के अनुभव हमारे सर्वत्र काम आये। बेगाचेक भी लगभग ऐसा ही था। वह एक विशिष्ट क्षेत्र था जहां केवल बेगा लोग ही रह सकते थे। ब्रिटिश शासन में उन पर अनुशासन की बड़ी कोशिश की गई परन्तु वे काबू में नहीं आये इसलिए नहीं कि वे खूंख्वार या नुकसानप्रदायक थे बल्कि इसलिए कि वे अपनी तरह का जीवन जीना चाहते थे। वे अपनी निरंकुश एवं बेदखल दुनिया चाहते थे। अन्त में अंग्रेजों ने भी बेगाचेक में उनकी इच्छा एवं परम्परानुसार जीवन जीने की छूट दे दी और सभी सरकारी नियम उनके लिए ताक में रख दिये गये।

इन जातियों के गीत, नृत्य, खेलकूद, वेश विन्यास, मेलेठेले, उत्सव-त्यौहार, विवाह रीति-नीति, खान-पान, रहन-सहन, कला-अलंकरण, साज-सजावट आदि से हमारा भरपूर ज्ञानवर्धन हुआ। उनके जीवन के विविध सांस्कृतिक पक्षों के फाटो-चित्र-फिल्में आदि भी खूब उतारी गई। उनके गीतों का रेकार्डिंग भी खूब किया गया। मध्यप्रदेश के बस्तर क्षेत्र के सांस्कृतिक सर्वेक्षण में ही हम सीमित नहीं रहे हमने मध्यप्रदेश के सरकजा, महाकौशल आदि क्षेत्रों का भी भरपूर सर्वेक्षण किया। मध्यप्रदेश के मध्यभारत क्षेत्र का सर्वेक्षण तो हम पहले ही कर चुके थे।

इसी अनुभव के दौरान मैं एक विशिष्ट अनुभव यहां अवश्य ही लिखना चाहूंगा। वह था नारायणपुर एवं कान्हा किसली का। नारायणपुर के जिस डाकबंगले में हम ठहरे हुए थे वहां एक फिल्म कम्पनी भी ठहरी हुई थी। मेरा और उनके निदेशक के कमरे के बीच केवल एक दीवार मात्र थी जिसमें एक दरवाजा भी था जो निरन्तर बन्द रहता था। रात देर तक वहां कुछ हलचल चलती रहती थी। मेरी नींद में बड़ा विघ्न आता रहा। दो-तीन दिन तक तो मैं बर्दाश्त करता रहा परन्तु एक दिन मुझसे रहा नहीं गया। मैंने किंवाड़ की दरार से एक फिल्म के कुछ अंश चलते देखे जिसमें आदिम औरतों के नग्न-पोज एवं उनकी घोटूल के विशिष्ट जीवनांश देखकर मैं अत्यधिक चिन्तित होगया। चूंकि हम घोटूल का अपना अध्ययन समाप्त कर चुके थे और कई घोटूलों का जीवन नजदीक से देख भी चुके थे। अत: हमें इस रहस्य का उद्घाटन करने में तनिक भी देर नहीं लगी।

हमने कुछ दिन तक अपना पड़ाव उसी डाकबंगले में बनाये रखा। धीरे-धीरे हमें पता लगने लगा कि यह फिल्म कम्पनी भारतीय वन्य पशुओं के चित्राकंन के बहाने वहां के आदिवासियों के नग्न एवं वेशियाना जीवन की फिल्म बनाकर अपना उल्लू सीधा करना चाहती थी। उस कम्पनी को मध्यप्रदेश शासन का सम्पूर्ण सहयोग एवं उससे सम्पूर्ण सहूलियत प्राप्त थी। हमें यह भी पता लगा कि पं. नेहरू के आदेश से ही इस फिल्म कम्पनी को वन्य पशुओं की फिल्म बनाने की सुविधा मिली थी।

मध्यप्रदेश के कई क्षेत्रों में यह फिल्म कम्पनी अपना काम पूरा कर चुकी थी। जो फिल्मांश मैंने अपने कमरे के दरवाजे की दराजों से देखे उससे मुझे पता लग गया कि भारतीय जीवन को वहशी अंधविश्वासों से परिपूर्ण, गरीब, नंगा, भूखा, जंगली एवं आदिम अवस्था में चित्रित करना चाहते थे। मैंने उन चित्रांशों में नंगी औरतें, नंगे आदमी गंदगी से भरी हुई दैनिक चर्याओं के बीच देखा। उन्हें पेड़ की छालों में लिपटा हुआ केवल लंगोटी लगाये हुए, कन्दमूल फल खाते देखा।

मैंने यह भी देखा कि वे अपने घोटूल के दड़बों में सोये हुए अपनी घोटूल स्त्रियों के साथ प्रेमालाप कर रहे हैं। उनके शिकारों के चित्रों में मारे हुए जानवरों की खाल उधेड़ते हुए मैंने देखा। कच्चे मांस को सेककर खाते हुए भी मैंने देखा। मैंने उन्हें अपने देवी-देवताओं के सामने पशु बलि ही नहीं मानव बलि देते हुए भी देखा।

यह सब दृश्य देखकर मेरी काया कांप उठी और मैंने यह तय कर लिया कि चाहे हमें कितने ही दिन इस डाकबंगले में ठहरना पड़े, इस कुत्सित काम को बन्द कराये बिना नहीं रहना चाहिये। मेरा राष्ट्रीय कर्तव्य मुझे बार-बार प्रोत्साहित कर रहा था कि मैं कुछ करूं परन्तु मैं एक अदना सा आदमी शासन द्वारा समर्थित इतने बड़े काम को कैसे पूरा करूंगा।

मैंने अपना मूल काम छोड़कर इसकी छानबीन करनी शुरू करदी। नारायणपुर के एक सामाजिक नेता से भी हमारा सम्पर्क था। उन्होंने हमारे काम में काफी सहयोग दिया था। एक रात किंवाड़ की दरार में उन महाशयजी को फिल्म कम्पनी के मैनेजर की लड़की से अठखेलियां करते देख लिया। वह लड़की उनकी गंजी खोपड़ी पर बर्फ का ढेला रखकर उनकी बड़ी मजाक बना रही थी।

-क्रमश:

''बेगाचेक एक विशिष्ट क्षेत्र था जहां केवल बेगा लोग ही रह सकते थे। ब्रिटिश शासन में उन पर अनुशासन की बड़ी कोशिश की गई परन्तु वे काबू में नहीं आये इसलिए कि वे अपनी तरह का जीवन जीना चाहते थे। अन्त में अंग्रेजों ने भी उनकी इच्छा एवं परम्परानुसार जीवन जीने की छूट दे दी और सभी सरकारी नियम ताक में रख दिये गये। फिल्म कम्पनी भारतीय वन्य पशुओं के चित्राकंन के बहाने वहां के आदिवासियों के नग्न एवं वेशियाना जीवन की फिल्म बनाकर अपना उल्लू सीधा करना चाहती थी। मैंने उन चित्रांशों में नंगी औरतें, नंगे आदमी गंदगी से भरी हुई दैनिक चर्याओं के बीच देखा। उन्हें पेड़ की छालों में लिपटा हुआ केवल लंगोटी लगाये हुए, कन्दमूल फल खाते देखा। अपने देवी-देवताओं के सामने पशु बलि ही नहीं मानव बलि देते हुए भी देखा।''

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।